

हमर जे भूखन भाइ छथि तनिका अहाँ नहि चिन्हैत छियनि ? जँ अहाँ कहब जे नहि, तँ हम कहब जे मिथिला सन कोमल माटिमे, जतऽ मखान आ माछ होइत छैक, जन्म लऽ कऽ अहाँक जीवन निष्फल रहल । अहाँक जीवन निष्फल नहि रह्य, तँ हम चाहैत छी जे अहाँ हमर भूखन भाइके अवश्ये चीन्हि लिअनि ।

भूखन भाइक वयस चौरासीसँ सतासीक बीच छनि । एहिसँ अहाँके ई भेल होयत जे ओ आब बेस धुत्युर बूढ़ भऽ गेल होयताह; डाँड़ झुकि गेल होयतनि; दाँत टूटि गेल होयतनि; केश पाकि गेल होयतनि; चाम धोकाचि गेल होयतनि; आँखि मिल-मिलाकऽ कोनहुना तकैत होयताह; आँखिक कोनीपर अधिक काल काँची अलसाइत रहैत होयतनि; दन्त्य, तालव्य आ मूर्द्धन्य वर्णक उच्चारणमे व्यत्यय भऽ जाइत होयतनि; फराठी लऽ कऽ चलैत होयताह; थोथ मुँहमे चुटकी भरि तमाकू ठोरतर संगरे पसरि जाइत होयतनि; ने तँ डाँड़मे नोसि-आनी रखैत होयताह; चुटुकापर चुटुका दैत होयतनि; नाकक टुन्नी-पर एक ठोप पीतोभ, सोनक बुलाकी-सन नाकक पानि लटकल रहैत होयतनि; अङ्गोछाक एक खूट बकरीक



सोझामे क्यो भुट्टु नहि कहि सकैत छनि

भूखन भाइक चुटुका

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

गोंत सन रंगमे रङ्ग रहैत होयतनि— मुदा नहि, ई कल्पना अहाँक फूस होयत, सब अनुमान व्यर्थ होयत ।

हे लिअऽ, आब हम अपन भूखन भाइसँ अहाँके चोन्हा-परिचय कराइए दैत छी । हमरो भूखन भाइ अपना हाथसँ साढ़े तीन हाथक छथि । तँ अहाँ हिनका सोझामे भुट्टु नहि कहि सकैत छियनि । अहाँ चाहब जे गऽज लऽकऽ नपियनि तँ अवश्ये ई एक गऽज, चारि गोरह छथि । मुदा अहाँ गऽजसँ नापिए ने सकैत छियनि, किएक तँ हमर भूखन भाइ कोनो फरगंजी ननगिलाट नहि थिकाह । हँ, ई धरि

अर्थ कोना ठीक भेल ! तँ अपना घरसँ दू माइलपर जे बलान बहैत छनि, ई ओहीठाम चल जाइत छथि । एहिसँ दू फल । बाह्य-भूमिक बाह्य-भूमि आ नदी दिशक नदी दिश । अहाँ कोनो बँधके दाँतक सम्बन्धमे पुछिअनि तँ अवश्य कहताह जे दूध बहैत बबूरक दतमनि दाँतक हेतु महोषधि थिक । तँ बलानक कात गोलासँ तेसर ई लाभ जे सब दिन बबूरक दतमनि काटि, अपना हाथ बना, तखन ई दतमनि करैत छथि । दू बेर चिबीलहुँ आ दू बेर रगड़िकऽ फेकि देलएक से कोन दतमनि भेल !

भूखन भाइ आकार-प्रकारमे जहिना एक गऽज चारि गोरहक तहिना काज-उद्यम बेस सोचिकऽ कयनिहार । तँ अहाँ हिनका दीर्घसूत्री नहि कहि सकैत छियनि । 'जन्म अवधि'मे ई बारह गोटा सूत्र रटलनि से शिष्य नहि भेटने बिसरि गेलाह तँ तँ हिनका मूल बूझब अपन भूखताक प्रचार करब थिक । जँ हिनका चिन्हबाक हो तँ नीक जकाँ एहि शब्द-चित्रक माध्यमे चीन्हि लिअनि । फेर ई तेहने-तेहने चुटुका छोड़ताह जे अहाँ हँसैत-हँसैत हकमऽ लागब ।—सं०

अवश्य जे ई भीतरसँ ननगिलाट सन मजगूत छथि । भरि मघारि भोखका उखड़ामे घूड़तर बैसि सात छरका कुसियार निङ्गटौनाइ हिनका लेखे दातमनि करऽसँ बेसी महत्त्वक काज नहि होइत छनि । कहू जे एहन दाँत अहाँके नवको वयसमे अछि ?

भूखन भाइके एको क्षण अहाँ निरर्थक समय गमबैत नहि देखबनि । ओना तँ घरबँआ, माने परिवारक आन लोक, हिनका कहियो यश नहि देलकनि । मुदा पन्द्रहे-सोलह वर्षक वयससँ हिनक ई क्रम चल रहल छनि जे प्रातःकाल उठिकऽ लोटा लऽ ई बाह्य-भूमि जाइत छथि । हिनक मत छनि जे जखन नामे थिकैक बाह्य-भूमि तँ बिनु बाहर गेला सन्तान शब्दक

एहिसँ नीक दतमनि तँ हाथी करैत अछि जे ओतेक मोटगर डाढ़ि सभक पडुरी चिबीलक आ फेकि देलक । बत्तीस दाँतके साफ करबामे हराहरी दुइए मिनट एक दाँतपर खच कयल जाय तँ बत्तीस दूना चौंसठि मिनट भेल । ताहिठाम ई साठिए मिनट, माने, एक घंटा मात्र दतमनि करैत छथि । चारि मिनट बचाइए लैत छथि । आब अहीं कहू जे कोन बेसी काल हिनका एहिमे लगैत छनि ? साफ लिखल छैक :

मोट दातमनि जे करय जे नित हरेँ खाँय बासि पानि जे नित पिबय तँ घर बैद न जाय

आजुक छोड़ा सब गोलीपर गोली,

पुड़ियापर पुड़िया, शीशीपर शीशी खयने जाइत अछि तँ ओ कोठो कहियो ठीक नहि रहैत छैक आ हमर भूखन भाइ ओखद की कहियो खयलनि ? नदी दिशक बहाने एक कोस गेनाइ आ एक कोस अयनाइ आ ताहिपरसँ दतमनिक काण्ड छोड़निहि अबैत छथि । तखन जँ नी बजे धरि ई गामपर घुरि अबैत छथि तँ कोन बेसी समय ई लगबैत छथि ? अनरे जँ मोजर नहि दिएक तँ ताहि लेल बयो दोषी कोना भऽ सकैत अछि ? तँ हमर भूखन भाइपर जँ बयो दोषारोपण करैत छनि जे ई घर-आश्रमक काज-उद्यम नहि करैत छथि तँ हुनका जनैत, आ हुनक काजक सम्बन्धमे जानि गेलापर हमरो-अहाँक जनैत, भूखन भाइ जऽवो बरोबर दोषी नहि छथि । आ रे, जे क्रम सतरहक धक्कसँ आवि रहल छनि ताहिमे छोटछोट कयनि-हार निश्चय भीतरसँ प्रचण्ड छथि आ एहन प्रचण्डक कथापर ध्यान देब ई अपना प्रतिष्ठाक विरुद्ध बुझैत छथि ।

भूखन भाइ पण्डित नहि छथि । अहाँके एकर अर्थ नागल होयत जे ई मूल छथि आ एहिसँ हम बूझब जे अहाँ भयानक अगुताह छी । श्री, ई जँ पण्डित नहि छथि तँ एकर माने ई



बेस, कहह तँ मास्टर शब्द कोन लिग

कहाँ भेल जे ई मूर्ख छथि ? एही सब द्वारे आइ-काल्हक लोककेँ हमर भूखन भाइ मनुक्ख नहि बुझैत छथिन । वकरी जेना रंग-विरंगक गाछ-पात हबर-हबर चिबौने जाइत अछि तहिना हबर-हबर कोनो बात बुझने चल जाइ तँ मनुक्ख किएक भेलहुँ ? रे, असली मनुक्खक काज थिकैक जे ओकरा सोझाँ जे कोनो वस्तु, जे कोनो बात, जे कोनो विषय अबैक तकरा स्थिरता-सँ, गंभीरतासँ बुद्धिक निचला तह धरि जाय दैक, कने' भीजऽ दैक, तखन जे उचित बूझि पड़ैक से करय । उपरे-उपर लप्प-लप्प गप्पकेँ लोकने गेलहुँ तँ महन्थ-स्थानक ऊँटेमे आ अहाँमे कोन अन्तर ? तँ भूखन भाइ जखन लघुकौमुदी पढ़ब आरम्भ कयलनि तँ बारह वर्ष धरि पढ़ैत रहलाह आ ताहि अवधिमे जइसँ बारह गोटे सूत्र, ओकर वृत्ति आ ओकर उदाहरण से पर्यन्त कण्ठस्थ कऽ गेलाह । ओहिसँ पहिने अमरकोष घोजैत रहथि । हुनक पित्ती जे रहथिन तनिक इच्छा जे जल्दी-जल्दी पढ़िकऽ भूखन पण्डित भऽ जाय, मुदा हुनका बुद्धिक खेतमे कोनो झड्ड तँ नहि उपजल रहनि जे सुड़रि-सुड़रि फेकने जैतथि । जे पढ़ताह से नीक जकाँ, जे करताह से नीक जकाँ । भूखन भाइ की कोनो एकटा पण्डितसँ पढ़लनि जे हुनक ज्ञान एकभगाह रहितनि ? गामक पाठ-शालासँ शुरू कयलनि आ लोहाक मसोम्मातक ओहिठामसँ होइत पचाड़ी महन्थ, चौरौत महन्थ, मटिहानी महन्थ, पातेपुर महन्थ—अर्थात् जतऽ कतहुँ भरि पेट भोजनक ओरिआन होइत गेलनि ताही पाठशालामे रहि थोड़ेक दिन पढ़ि देलथिन ।

अठारहम वर्षक वयसमे तँ पढ़ब शुरू कयलनि । आजुक युगक लोक नहि थिकाह जे अभिमन्यु जकाँ गर्भसँ चक्रव्यूह भेदन करऽ अबैत रहितनि । ताहि दिनक लोक तँ जा' धरि पम्ह

अबैक ता' धरि नेना बूझल जाइत छल । ओ वयस थिकैक खयबा-खेलयबाक । आबक लोकक इच्छा जे नेना जनमय से 'मेट्रिक'क 'साट्रिपिट्री' नेनहि । भूखन भाइ एहि युगक अगुताह लोक नहि छथि । तीस वर्ष धरि घोखन्त विद्यामे लागल रहलाह । गोसाँइक नाम, शीतलापटक, शक्रादि-स्तुति, सत्यनारायणक कथा, एको-द्विष्ट-पार्वण—सेहो सब एही अवधिमे सीखि गेलाह । ऊपरसँ जँ लघुकौमुदीक दस-बारह टा सूत्रो अभ्यास भऽ गेलनि तँ कोन थोड़ पढ़लनि ? ई दोसर बात जे बादमे लघुकौमुदी बयो हुनकासँ पढ़ऽ नहि अयलनि तँ सूत्र सब हुनका बिसरि गेलनि, मुदा दूर्वाक्षतक मन्त्र तँ एखन धरि ओहिना मोन छनि । तखन हुनका मूर्ख कहब अपन मूर्खताक विज्ञापन करब थिक ।

इज्जति कोन पदार्थ ?

बेटिक गहना बन्हकी रखने जँ बलि रहल काज धूमधामसँ आइ हयत आ' गद्गद हयत समाज फल्ला बाबू मुइला, कयलनि चिल्ला बाबू भोज आगाँ-पाछाँ जे हो, बयो की काज करै' अछि रोज ?

बापक अरजल खेत राखि बुदभरना करी बिदाइ गौआँ-घरआ सर-कुटुम्ब आ' हविष होथि जमाइ की करब लय, बिका जाय जँ गाछी आ बँसबारि कन्यादान करब तेहने ठाँ पढ़य न गौआँ गारि

गोलेदार वा मरवाड़ीक जँ बड़ल जाइ' अछि कर्ज सरकारी 'लोन'क नोटिस जँ भेटय तँ की हर्ज ? मुदा हयत उपनयन ठाठसँ जेहने मुंडन भेल की न करै' अछि लोक कहूँ तँ अपना इज्जति लेल ?

नोट-पिहान पुरी वा पाहुन-परक आवि जँ जाथि भार-दोर दी वा कोनहुना घर पर दू जन खाथि इज्जति टा रहि जाय, करब तेहने सब स्वार्थ-परार्थ मुदा आइ धरि के बुझलक जे इज्जति कोन पदार्थ ?

—श्री रामकृष्ण भा 'किसुन'

भूखन भाइक लेखे सात वर्षक नेना आ सत्तर वर्षक बूढ़मे केवल एक शून्यक अन्तर, तँ अन्तर शून्ये बूझक चाही । ओ सभक संग एक रंग झूमि-झूमि, हृदय फोलि गप्प करैत छथि ।

नेना सभक हेतु हमर भूखन भाइ 'बृहत्कथा-सरित्-सागर' थिकाह । नित्यप्रति अपन चुटुक्का छोड़ैत जाइत छथि आ द्रौपदीक ब्रटलोही जकाँ ओ भरले रहैत छनि ।

आइ बड़की गाछीक झमटगरहा अमताहा लड़बा तर जे मचात छैक, जाहिठाम साँझु पहर कऽ गामक ललबबुआसँ लऽ कऽ तबविवाहित वर पर्यन्त टहलबाक बुद्धिऐँ एकत्र होइत छथि, अखाड़ा जुटल रहैक । छुट्टीक समय रहैक । इसकुलिया ओ कौले-

जिया छौंड़ा सब गाम पहुँचल छल । हिनक चुटुक्का तँ नामो छलेहे, छौंड़ा सब' आग्रह कऽ देलकनि—'भूखन भाइ, एकटा चुटुक्का छोड़िओ ।'

ई हो बूझि लिअऽ जे हमर भूखन भाइकेँ भरि गामक लोक 'भूखन भाइ' सँह कहैत छनि—भने सम्बन्धे' ओ ककरो काका, बाबा वा किछु होयुन । तँ भूखन भाइ तखन अपन चुटुक्काक पुड़िया फोललनि—'एकटा बात कहह, तोरा लोकनि जकरासँ पढ़ैत छह से 'मास्टर' शब्द कोन लिंग थिक ?

एकटा छौंड़ा पुछलकनि—'कोन भाषामे ?'

भूखन भाइ कहलथिन—'कोनो भाषामे ।'

दोसर छौंड़ा उत्तर देलकनि—'मास्टर शब्द पुल्लिङ्ग थिकैक ।'

भूखन भाइ बजलाह—'प्रमाणित कऽ सकैत छह ?'

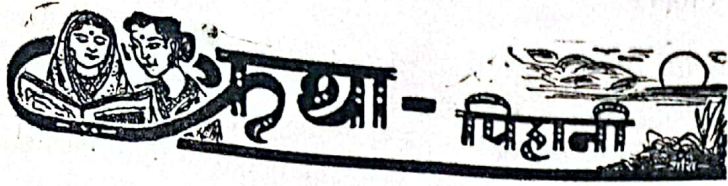
पहिला छौंड़ा बाजि उठल—'एकरा प्रमाणित करबाक कोन काज ?'

भूखन भाइ अड़लाह—'बिनु प्रमाणे' हम बात नहि मानबह । हमरा जनैत मास्टर शब्द त्रिलिङ्ग थिक ।'

सब छौंड़ा ठहक्का लगलक । एक गोटे बाजल—'त्रिलिङ्ग तँ पहिले-पहिल सुनलहुँ ।'

भूखन भाइ कहलथिन—'लैह प्रमाण । जखन मास्टर सब हेडमास्टर-क सोझामे रहैत छथि तँ स्त्रीलिङ्ग, जखन विद्यार्थी सभक सोझामे पढ़ाबऽ पहुँचलाह तखन पुल्लिङ्ग आ जखन चारि बजे स्कूलसँ डेरापर पहुँचलाह, नोन-तेल-लकड़ीक फरमाइस भेलनि आ अपन जेबी, डाँड़, मनोबिग खाली देखलनि तखन नपुंसक लिङ्ग भऽ जाइत छथि । जँ तर्कसँ मानबह तँ बेस, ने तँ पुछहुन गऽ फल्ला बाबू मास्टरकेँ ।'

एतबा कहि ओहि दिन भूखन भाइ आगू बढ़ि गेलाह ।



दैता पोखरि

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

अने शीतल ठाकुर जीवन भरि हर-फार, हाँसू-खुरपी, कुड़हरि-कोदारि आदि खेतीक सामान सँह बनबैत रहल, मुदा जहियासँ ओकर बेटा मङ्गलाकेँ धड़िया पहिरवाक लूरि भेलैक ओ रुखान-बसिला नहि छलक। घन, हथौड़ी, रेती, नेहाइ, भाथी, छैनी सँह सब पकड़लक आ अट्ठारहसँ बीस वर्षक होइत-होइत कोन पूर्व-जन्मक संस्कार जगलैक जे चक्कू, सरौता, गुप्ती, बछी, भाला, गड़ास आदि लोहाक सामान बनयबामे ओ परोपट्टामे विख्यात भऽ गेल। आब कोन सौखीन बाबू-भैया होयताह जनिका जेबोमे मङ्गलाक गढ़ल एकटा सरौता नहि होइनि आ तमाकुलक बटुआमे एकटा चक्कू नहि होइनि। एही सब वस्तुक विक्रीसँ ओकर आम-दनी बढऽ लगलैक-दिन दुना राति चौगुना। दोषमे दोष मङ्गलाकेँ ई बड़ भारी रहैक जे केहनो ताक बला गृहस्थ बेरपर किएक ने पहुँचि जाथुन,



चोट बजरल-ठाँह, ठाँह, ठाँह !

हड़बड़ीमे रहथु कि निचैन, मङ्गला हर, लागनि, पालो, हरीस ई सब नहि छुबितनि। कखनो कऽ बाप कहवो करैक जे दस घर गिरहतकेँ जेँ डेबने नहि रहबे तँ गाममे गुजर मोसकिल भऽ जयतोक, मुदा ओ छौंड़ा कान-बात देवा लय एकदम तैयार नहि।

सड़कक कातक ओकर घर, दरबज्जापर बेस झमटगर कदम्बक गाछ—छाया एहन सघन जे छोट-छोटा अछार-पछार लोक नीक

जाहि समाजमे बिनु स्पर्श कयनो ककरो चरित्रपर कलंक मड़ल जा सकैत अछि से समाज एहिना प्रवाहमे भसिया जाओ, डूबि जाओ, मरि जाओ—एहन प्रतिक्रिया छैक मङ्गला कमारक जे जिनगी भरि श्रमक पूजा कयलक, धन अरजलक आ सुखक श्वास लैत अपन जीवन बिताबऽ चाहलक। मुदा ओकर उन्नति आ सुख बाबू-भैयाकेँ किएक पसिन्न होइतनि! ओ लोकनि देलथिन ओकरा जबर्दस्त छिटकी—कलंकक थोपान! तँ को ओ हारि मानलक? —सं०

जकाँ खेपि लैत छल। ओहि गाछक डारि-पात एहन विलक्षण रूपेँ पसरल वृत्ताकार बनि गेल छलैक जे बूझि पड़ैक कोनो चतुर माली कतरि-कुतरिकऽ कोनो उद्यानमे स्थित गाछ जकाँ गोलाकार बना देने होइक।

साधारणतः ओहि बाटेँ चलनि-हार बटोहीक हृदयकेँ ओ गाछ अनेरे अपना दिस आकृष्ट कऽ लैत छलैक। विशेषतः वैशाख-जेठक तबधल दुप-हरियामे रोदँ लोहछल, पियासँ आँट, थाकल-मुरझायल बटोही ओकर शीतल छायामे अपार शान्तिक अनुभव करैत छल। आपाढ़-साओनमे नव पल्लव ओ फूलसँ लदल डारिक

हरितिमा ककरा चित्तकेँ एक क्षणक हेतु नहि मोहि लैत छलैक।

ओहि गाछक सटले उत्तर, मुन्दर जगति ओ चबूतरा बान्हल विशाल इनार, जाहिमेसँ प्रतिदिन कमसँ कम हजार घँल पानि अवश्य भरल जाइत होयतैक। इनार खुनीनिहारक पुण्य कही वा मङ्गलाक भाग्य, ओ स्थान सतत रंग-विरंग गीँआ-अनगीँआ सबसँ भरल रहैत छल। एक बेर ओहि इनारक पानि पिनिहार बटोही जेँ कदाच कहिओ ओहि बाटेँ फेर चलैत छल तँ विनु पियासो ओहि इनारक पानि बिनु पीने आगाँ डेग नहि उठबैत छल, आ गमल-बूझल लोककेँ जेँ कोसभरि फराको पियास लगैत छलैक तँ लफरल ओही गाछतर आबि दम धरैत छल।

पाँच मिनटमे ओहि गाछक

शीतल छाहरि मनक क्लान्तिकेँ दूर कऽ दैत छलैक। डोल भरि पानि भरि हाथ-पैर, आँखि-मुँह धोलक, दस घोंट पानि पीलक कि ने जानि, शरीरक सब थकनी कोन बाटेँ बिला जाइत छलैक।

जल जेना मिसरी घोरल हो। शीतल जेना बर्फ देल होइक। कड़गर एहन जे आँकड़-पाथर जे किछु पेटमे हो, सब छन भरिमे पचि जाय। रच्छ ई छलैक जे कोनो वैद्यराजक घर-लग पासमे नहि छलनि, ने तँ पाचकक याचक हुनका द्वारि धरि कहिओ ने पहुँचितनि।

अति उच्च भूमि, पीच देल



ओ प्रवाहमे भसिया रहल छल। सड़क, तीन कोस पूब धरि कतहु आड़ नहि, वन किएक ने नहि डोलैत हो, मुदा ओहि ठाम बसातकेँ अयनहि। तीन कोससँ चलल बसात ओही ठाम आबि बजरैत छल। गरीब-गुरबाक शिमला, दार्जिलिंग, मंसूरी वा राँची जे कही, से यँह छलैक। फलतः शीतल ठाकुरक दलान सतत लोकसँ भरल रहैत छलैक। असलमे लोक तँ थिक लक्ष्मी। जाहि ठाम दस गोटे रहल ताहि ठाम अनेरे प्रसन्नता लहराइत रहैत अछि।

एक टा बात आरो, जाही ठाम दस टा बासन रहैत छैक ताही ठाम ढनमनाइतो छैक। सतत जन-संकुल रहलाक कारणेँ गामक छक्का-पंजासँ लऽकऽ अन्तरराष्ट्रिय राजनीतिक प्रसंगे पर्यन्त ओहि आबि टकराइत छलैक। दू विरोधी विचारक लोकमे गप्पक प्रसंगे जँ गर्मी बढ़लैक तँ कखनो खड़बड़ाइओ जाइत छलैक। किन्तु मङ्गलाकेँ एहि सब लऽ कऽ लाभ ई छलैक जे अपन निर्मित वस्तु सभक विज्ञापन करवाक प्रयोजन नहि पड़ैत छलैक। ने लाउड-स्पीकरक खर्च, ने पत्र-पत्रिकाक खुशामद—अनेरे पन्द्रह-बीस कोस चारू-कातक लोक चक्कू-सरौतासँ लऽ भाला-बछी पर्यन्त बनबबैत रहैत छल। दिन-राति भाथो-हथौड़ी, नेहाइ-रेती चलबिते रहैत छल तथापि आवश्यकताक पूर्ति एकसरे नहि कऽ पबैत छल। जाही अनुपातेँ आवश्यकता बढ़ैत गेलैक, दामो बढ़ैत गेलैक

(शेष पृष्ठ १८ पर)

दैता पोखरि

(पृष्ठ १० क शेषांश)

आ ताही अनुपातेँ एकर आयमे सेहो वृद्धि होमऽ लगलैक ।

‘जकरे भगवान् दू पाइ दैत छथिनसँ हने इलबाइस करैत अछि’— ई टिप्पणी गाम-घरक स्त्रीगण मङ्गलाक सम्बन्धमे करैत छल । गामक बाबू-भैयाकेँ मङ्गलाक अलवर फैसन, कण्ठमे चकती, कानमे सोनक लैंड, सुपर फाइन धोती, मौजा जूता, हाथमे घड़ी आदि देखि परमाच्छन्न उठैत छलनि । बाबू-भैयाक, पढ़ा आ बाबू लोकनिक फोट-फाट मङ्गलाक एहि डील-डौलक सोझामे मलिन पड़ि जाइत छलनि । ओना जखन ओ काज करैत रहैत छल तँ मात्र गोलगला गँजी आ नील रंगक हाफ पेन्ट पहिरने रहैत छल । केवल साँझ पहर, किछु कालक हेतु अपन पूरा पोशाकमे ओ टहलऽ बहराइत छल, खासकऽ कऽ दैता पोखरि दिस । प्रायः गामक सब रंगक लोक एहि बेरमे एहि पोखरि दिस अवश्य अवैत छल ।

‘के कहतैक जे मङ्गला शितला कमारक बेटा थिक । जकर बाप जिनगी भरि खान-बसिला चलबैत रहि गेलैक तकर टेढ़ी देखि किछु फुरिते ने अछि’— ई टिप्पणी छलनि बाबू-भैयाक । ‘छोटका लोककेँ जहाँ दू साँझक उपाय घरमे भेलैक कि गोरखेँ कतहु ठामे नहि रहैत छैक ।’

मङ्गला अपन अनवरत मेहनति आ अपन लूरि-मुँहसँ एहि पाँच-सात वर्षमे तेहन जथा-जाल, धाख-रोआब, ‘सिनेह-परेम’ बना लेलक जे पचीस-पचास बीघा जोतनिहार सम्पन्न गृहस्थ आब ओकर मोकाबिला नहि कऽ सकैत छलथिन । गाममे जे दू कट्ठा चारि कट्ठा जमीन उखड़ैक, मङ्गले कीनैत छल । छोटका लोककेँ जे बेर-विपत्ति पड़ैक, जे किछु खगता होइक से बाबू-भैयाक ओतऽ नकदड़ी

करैऽ नहि जाइनि । ई सब देखि दस टाका दस सेर बेर पर दस एकक दस असूल केनिहारक अँतड़ो दुखाइनि । धरती भऽ गेल बाँझ, राड़-रोहिया भऽ गेल महग, नगद-आमद सबकेँ रहतैक कहाँसँ ? आमो-कटहर फड़ैक सँ पचास, हजार पाँच सँ, जे जेहन तकरा तेहन भऽ जाइत छलैक, से आव तँ तेहन समय आबि गेलैक आ तेहन दिनसँ दिन भेल जाइत छैक जे बाबू-भैया कहौनिहार मध्यवित्त परिवारकेँ दिन काटब दुर्घट भेल जा रहल छैक । एही सब कारणेँ गमे-गमे हुनको लोकनिसेँ गोटपगरा लोक बेगता पड़लसँ मङ्गलाक घर दिस ससरल लागल छलाह । बहुते गोटे ई हो सोचिकऽ जे राड़-रोहियाक धनमे तँ एतेक हिस्सा चाहवे करी । बुड़बकहाकेँ धन नहि होयतैक तँ बुधियारबा ठकि कऽ खायत कोना ? जेना-तेना, मुदा गोटा-गोटी बड़ थोड़े बाँचल होथि ; ने तँ मङ्गला छल महाजन नीचसँ ऊँच धरिक ।

ओकरा घरक पच्छिम चारि कऽक एक सुन्दर कलमबाग । बिमुनी बाबूकेँ कन्यादान अत्याज्य छनि, आइ-काल्हि कन्यादान शब्दे चिन्ता ओ खर्चक पर्यायवाची बनि गेल अछि । बेटीओतँ सन्ताने थिकैक । विवेकशाल व्यक्ति कतहु भसिआ दैतैक से कोना होयतैक । काने-कान गप पसरल—बिमुनी बाबूक कलम बिकरू छनि । कलम तँ ई कलमे छैक, कोनो साल अवंच नहि रहैत छैक । डाँड़ बिनु सकत रहने ई कलम भेटबो अभाव ।

बिमुनी बाबूक पितामह बुढ़ारीमे एतवे काज कयलनि । एकटा खोपड़ी बान्हि डेरे अपन ओही ठाम खसा देलनि । खयबाक बेरमे गामपर जाथि, ने तँ हुनक अन्तरात्मा ओही कलम-बागमे रमल रहैत छलनि । लोकक मुँह सुनैत छी जे जतेक प्रेमसँ ओहि गाछ सबमे दून साँझ पानि ढारैत

रहलाह ततेक प्रेमसँ जे महादेवकेँ एको साँझ गोटेको लोटा जल ओ ढारैत रहितथि तँ कैलासमे हुनका हेतु एक टा स्थान सब दिनक लेल सुरक्षित भऽ जैतनि ।

जर्दा, जर्दालू, लक्ष्मोश्वर भोग, सिपिया, सुकुल, सबुजा, बम्बइ, कलकतिया, कृष्णभोग, दड़िमा, फजली, गुलाबखास, गुलबहार, मुलुकजीत, भदई, बयुआ—एक गाछ, आधगाछ सब रंगक आम रोपलनि । लागल-लागल चारू आड़ा अपना हाथेँ कोदारि भाँजिकऽ कटलनि । आव तँ ओहि आड़ापरक साँसो सब सेहो सारिल भेल जाइत छैक । तीन वर्षक सेवा-सुश्रूषा ओहि गाछ सबकेँ समर्थ बना देलक । एहि तीन वर्षक बीच तीन सँ घड़िसँ बेसी बड़हरी चम्पा केरा उपजीने होयताह । मरबो कयलाह बूढ़ा ओही कलमबागमे । ओही ठामसँ उठाकऽ लोक लऽ गेलनि आ दैता पोखरि पड़बेरिया मोहारक नीचावला गाछमे डाहि देलकनि । एहन सम्पत्ति सोटल छनि कोनो धनिककेँ ? धरखनो बाबूकेँ ओहि कलमक सेहन्ता होइत छनि ।

कलमक दाम फूजल चारि हजार, हजार रुँएँ कट्ठा । एतेक टाका एक मुश्त के बाहर करत ? धरखन बाबू जे चाहथि तँ लऽ सकैत छथि । मङ्गला एखन नव पर धनिक भऽ रहल अछि । दूसँ चारिसँ बाहर कऽ सकैत अछि, आ ई चारि हजार ! धरखन बाबूकेँ छोड़ि दोसर नहि सकत । चारूकातसँ लोको धरखन बाबूकेँ कहलकनि । ओ चौबीस सँ धरि देब सकारलथिन । मङ्गला सुनलक तँ जो पनिछा गेलैक । सात सँ रुँएँ कट्ठा ओ दाम बढ़ल । धरखन बाबू सुनलनि तँ पितेँ माहुर भऽ गेलाह । डाक बढ़ल आ चारि हजारपर ठेकि गेल, मुदा अन्तमे मङ्गलेक नामेँ ओ कलमबाग रजिस्ट्री भेलैक । गाममे टोका-टिप्पणी चलऽ लागल—‘कैक पुरखाक अरजल धाख

आइ धरखन बाबू गमा देलनि । बीत भरिछ छौंड़ा नाकमे तीन कीड़ी बान्हि देलकनि ।

धरखन बाबू सन कलामो लोक एहि टिप्पणीपर कछमछा उठलाह । दिन-राति मङ्गलाकेँ पछाड़वाक चिन्तामे निद्रा नहि होइनि । सोचैत-सोचैत हुनका एकटा रस्ता मुझलनि...!

आषाढ़ मास, अन्हरिया पक्ष, मड़िआयल मेघ, झलकलाइत तारा, क्षितिजपर साज-सङ्कोमे लागल करिया मेघक हँसेड़, रातिक एगारह बजैत । आम बाछक हेतु जाबो आ लालटेम-डेङ नेने पहुँचल मङ्गला कलमबागमे । मचानपर चढ़ि, डेङमे जाबोकेँ लटका खोपड़ीक चारमे खोंसैत अछि हि एक भयानक चोत्कार भेलैक । कोनो नारोकण्डक ध्वनि वातावरणकेँ चोरैत मुखरित भऽ उठल—‘रौ कोढ़िया रौ कोढ़िया ! रौ एहिना अपनो बहु-बेटोक इज्जति लोक लेतीक रौ टिकजह्रा ! !’ ‘मङ्गला ततेक जोरसँ चौकल जे ओकरा बामा हाथक लालटेम भट दऽ नीचाँ खसि पड़लैक ! अन्धकार आर सघन भऽ गेल । के चिकरन, की भेलैक एही तारतम्यमे जाबत छल तावत् चारू भागसँ चारि गोटे आबि मङ्गलाकेँ तीन-चारि लाठी धऽ देलकैक । गर्द पड़ि गेल । चारूकातसँ लोकक करमान लागि गेल । चारू भाग लोक थहाथही करऽ लागल । वयो कहलकैक, एकरा थाना पठाउ, वयो कहलकैक—मारैत-मारैत सारकेँ एही ठाम मारि दे, अनकर बहुबेटोक इज्जति नहि बुझनि-हार समाजमे नहि रह्य, सँह नोक । अन्तमे ग्राम-पंचायतमे नालिस भेल । लोक कहैक, ई सरबा चर्मन धरि नहि बुझलक । ओही ठाम धरखन बाबू मुखियाक सेतपर सुनरा चमार दू-चारि धौल, दू-चारि थापड़, दू-चारि घरमेच्चा लगा देलकैक । धरखन बाबू सरपंचकेँ कहलथिन—‘करैत जाउ निर्णय । सरपंच बजलाह-धनक गोरखेँ एकर आँखि चोन्हरा गेलैक अछि ।

(शेष पृष्ठ २० पर)

दैता पोखरि

(पृष्ठ १८क शेषांश)

जखन साफ पकड़ल गेल तखन गोआही-तोआहीक काज कोन । पचास टाका जरिबाना दाखिल करी आ समाज, जाति-भाइ सबसँ फराक रहौ । शोतल ठाकुरक आँखिसँ झर-झर नीर झहरल जाइक । ओ पचास टाका दाखिल कयलक । पंचैतो समाप्त भऽ गेल ।

मङ्गना एक शब्द नहि बाजल । ओ एहि जनतन्त्रक समीक्षा मने-मन करैत रहल । एही ग्राम-राज्यक हेतु देशमे एतेक पैघ आन्दोलन भेल ? कहयबाक हेतु मुखिया, बड़का लोक, बुधियार, भलमानुस, मुदा को मिथ्या कलंक लगबैत ककरो जो भहि अंतरयलैक ? समाज एतेक पतित भऽ गेल ? दिन-रातिक श्रमसँ कमायल टाकासँ कलमबाग कोनि ओहि ब्राह्मण केँ उचित दाम देलैक तकर ई कुपरिणाम ? मङ्गना दैता पोखरिक दखिनबरिया मोहारपर, जे हाले-साल चारि सँमे दू कट्टा कितने छल, एक छोट-छोन घर बान्हि अपन लोहरसारि लऽ गेल ।

ई दैता पोखरि एहि गामक नाक थिक । मङ्गनाक घरसँ दच्छिना, सत्तरि बोधामे पसरल एकर मोहार, अङ्गन ओ पनिज्ञाव । एकर पुबरिया मोहारक पूब दऽ कऽ पोचवला सड़क । अढ़ायटा मोहार एकर बाँचल छनैक । आधा दच्छिनसँ, आधा पच्छिमसँ, आधा पूबसँ आ सौंसे उत्तरसँ । नेना-भुटका एहि मोहार सबकेँ अपना गामक पहाड़ बुझैत छल । खूब चाकर अङ्गन ताहिमे एक कात जंगली गुलाब, बेली आ साहोड़क जंगल । एक कात सपाट मैदान जाहिमे गामक माल चरैत । एक भाग महात्माजीक फुलवाड़ी आ एक भाग लोकक इबरे-जातसँ बनल चारि-पाँच टा घाट । दच्छिनबरिया मोहार दू भागमे बाँटल ।

पूबसँ मङ्गना अपन लोहरसारि बनौलक; ताहिसँ पच्छिम पोखरिमे पानि खसबाक बाहा आ पच्छिमसँ पानिक निकासो लेल काटल पड़न । बाहाक कातमे पाँच लागल लाल, पोअर, उज्जर कनैल सभक गाछ । बीच पोखरिमे निर्मल जल, यमुना जल सन हरिअर कंचन, ताहिमे अछिन्नरे कमल । पछबरिया मोहारपर पुरान उखड़ल गाछो, जाहिमे भरि गामक मुर्दा जरैत । उतरबरिया मोहारपर तेतरि, सोसो, बाँस, गम्हारि, अकठ आदिक घोर जंगल । बत्तोस बोधा पनिज्ञाव आ अठोस बोधामे अङ्गन मोहार आदि पसरल । पुबरिया-दछिनबरिया कोनपर विशाल एक टा बड़-पाकड़ि आ पोपरक सम्मिलित गाछ, जाहि तर सन्धेसक गाँव ।

ओही गाछपर रंग-विरंगक चिड़इ सभक असंख्य खोता । ओहि पोखरिक सम्बन्धमे किबदन्तो यह जे रातारातो दैत्य सब ई पोखरि खूनि प्रात होइत सब बिला गेल । पोखरिक दच्छिन पुरान मङ्गने धार । जखन ओहिमे पानि अबैक कि दैता पोखरि भरि जाय । पछबरिया पड़नपर बाढ़िक समयमे अध-अध मोन, छी-छी पसेरोक रोहु-बोआरो लोक ठेङ्गसँ मारि लैत छल । सोड़हो सालक रीदोमे क्यो एहि पोखरिक थ.ह नहि पौलक ।

साओन मास । पंचमी, मधु-श्रावणो पावनि कयनिहारि नव-विवाहिना कन्या सभक झुंड जाहो-जूही तोड़बाक हेतु प्रतिवर्ष एहि पोखरिपर अबिते छल । ओहि वर्ष धरखन बाबू सेहो कन्यादान कयने

छलाह । मङ्गने धारमे बाढ़ि आवि गेल छनैक । दैता पोखरिमे पानि बेस जोरसँ खसि रहल छनैक । तीन गोट कन्या जाहो-जहो तोड़ पहुँचल । मङ्गना अपन लोहरसारिमे बँसल गड़ास गढ़बाक हेतु धिपोल लोहाकेँ नेहाइपर राखि पिटबाक हेतु हथौड़ी उठौलक कि कनैलक एकटा ठहुरो तड़तड़ा कऽ टुटलैक आ चबम दऽ क्यो ओहि बाहाक रेतपर खसल । दूनू छौंड़ी किकिहारि मारि उठल ।

मङ्गनाक दृष्टि ओहि शब्दक संग धूमि गेलैक । देखलक, धरखन बाबूक पन्द्रह वर्षीया कन्या ओहि प्रवाहमे उब-डुब करैत बहलि जा रहलि अछि । ओकरा पीछे एक बेर उत्तेजित कयलकैक—जोवन-मरणक प्रश्न थिकैक । एहि बालिकाक कोन दोष ! एकर प्राणक रक्षा अवश्य करक चाही । पुनः प्रतिशोधक भावना जाग्रत भेलैक—‘जाहि समाजमे विनु स्पर्श कयनो ककरो चरित्रपर कलंक मड़ल जा सकैत छैक से समाज एहिना प्रवाहमे भसिया जाओ, डूबि जाओ, मरि जाओ । बचोनिहार फेर किएक कलंक लेत गऽ ?

ओहि पाकड़िपर चिड़ै-चुनमुन्नो चे-चे करैत छल, कनैलक गाँव तर ठाढ़ि भेलि दूनू छौंड़ी सतृष्ण नेत्रे मङ्गनाक दिस ताकि रहल छलि, उतरबरिया अङ्गनमे चरैत माल-जालमेसँ एकटा धेनुआर गाय प्रायः अपन बच्चाक स्मरण कऽ खूब जोरसँ हुँकरि उठल, बीच पोखरिमे बड़ोटा बोआरो फाति उठल, कमलक डाँटकेँ पकड़ि अपन प्राण-रक्षाक असफल प्रयास करैत धरखन बाबूक बेटी-चन्द्रकलाक लहराइत केश-पाश क्रमहि बीच पोखरि दिस दहाइत चल जाइत छल आ मङ्गना ओहि धोपल लोहपर हथौड़ी बजारि रहल छल-ठाँहि... ठाँहि... ठाँहि !

युग-धर्म

लोक हम वनस्पति-युगक
कोनो देश
कोनो प्रान्त
उपना नहि आनठाम
खाइत छी बिस्कुट
आ' पिबैत छी गरम चाह
कोइआसँ नापि-नापि
लैत छी सुगन्धित तेल
ढारै' छी मगजपर लोटाक लोटा पानि
'रंगड़' छी साबुनपर साबुन
बनयबा लय कान्ति
आ' पयबा लय शान्ति
मखन जीनक पण्टपरसँ
चढ़बै छी मनोला
पहिरै' छी हवाई चप्पल
करैत छी लीला
नीक जकाँ घोखने छी
फ्रायडक सिद्धान्त-सार
पैसँ' छी अचेतनमे निर्धोखि
फोलि हम चेतन-द्वार
विश्लेषण करैत छी
युग-युगसँ भोतिआयल दमित इच्छाक
तृष्णाक ज्वालामे
क्षार कयल अन्तरक श्रद्धा
आ' बोरि लेल
भरल कठौत आडम्बरमे
अपन बहत्तरि हाथक अंतड़ीकेँ

---श्री गोपाल जी भा 'गोपेश'

हमर कन्तू भाइ जखन कलकत्ता-
मे कन्ट्रक्टर काज करैत रहथि तखन
देशसँ गेल राइ-रोहियासँ लऽ बाबू
भैयाक घरक फालतू लफंगा नेना-
भुटका पर्यन्त जे पड़ाकऽ कलकत्ता
जाइत छल तकरा सभक हेतु कन्तू
भाइ अपन कन्तोड़ फोलि दैत छज-
थिन। परोपकारेमे अपन जीवन बित-
वैत कोन तरहँ ओ अपन स्वार्थ सिद्ध
करैत छलाह से आइ मोन प्रडि रहल
छनि।

विचार करू जे कलकत्ता सन
शहर आ ताहि ठाम पन्द्रह-पन्द्रह, मस-
मस दिन अपना डेरा पर राखि, अपना
मेसमे भोजनक जोगाड़ धरा सबकेँ
कोनो ने कोनो नोकरी अवश्ये धरा
दैत छलथिन। ई तँ अवश्य जे कन्तू
भाइ कोनो तेहन ओहदापर नहि छलाह
जे प्रिंसिपल, प्रोफेसर, मास्टर, सम्पा-
दक अथवा कोनो कलक्टर-मजिस्टर
ककरो बना दितथिन, मुदा अपन-
अपन योग्यताक अनुसार ककरो
बंगाली सभक धोया-पूतकेँ खेलबक
लेल, ककरो दरवानी, ककरो
भनसीया, ककरो ट्राममे कन्डक्टर,
ककरो चौके वत्तन आ क्यो तेहन
प्रतिष्ठित घरक गेल तँ काली
सहस्त्रनाम, गोमाछ सहस्त्र नाम,



कोजागराक भार मोन पड़लनि।

कन्तू भाइक कोजागरा

श्री चन्द्रकाय मिश्र 'अमर'

विष्णु सहस्र नाम आदिक पाठे
धरा धरि दैत छलथिन किछु ने किछु
अवश्य। तखन ई हो बात सत्ते जे
ककरोसँ आँठा छाप लऽ लेथिन आ
ककरो विश्वास पर छोड़ि देथिन,
दरमाहा को दक्षिणा भेटलापर
चुकता कऽ देल करनि।

मंगल पाँच... पाँचम दिन कोजा-
गरा थिक। एखन धरि ने घर आङन
नोपल पोतल, ने छद्धारल-हेउरल गेल
अछि ने दरवज्जा छीलल-छालल गेल
अछि आ ने बौआ चुमान करावऽ
अयलाह अछि आ ने ई कुटुम्बे समाद
देलनि अछि जे कतेक भार पठा रहल
छथि।



जेना मचान परसँ खसल होथि।

कन्तू भाइकेँ मोन रहनि छोट भायक कोजागरा आ ताहिमे आयल
सताइसो भारक केरा-मधुरक स्वाद। अपन नेनाक कोजागरा जेना-जेना
लग अबनि तेना-तेना मँहमे पानि भरब आरौ बड़ले जाइनि, मुदा हुनक
नेना युगकेँ चोन्हि लेने रहथि। ओ भारक लेल ससुरकेँ मना कऽ देलक।
कन्तू भाइ ऊँच मचानसँ खसलाह। शेष प्रस्तुत हास्य-कथामे।—सं०।

ताहियुगमे जखन हमर कन्तू भाइ
अपन छोट भाय सन्तूक बियाह करीने
रहथि तँ पछारि गामजला सन्तूक
कोजागरामे सताइस टा भार पठीने
रहनि।

आइ विजया-दशमीक उल्लास
भरल पर्वमे टोकमे एक पाँज जयन्ती
बन्हने नाकेँ कानेँ कपारेँ जगजगार
चानन ठोप आ वँछनाथी पासाक
उज्जर दप-दप त्रिपुण्डसँ विभूषित
दलानपर एकसरे बैसल हमर कन्तू
भाइ दूरसँ बूझि पड़ैत छथि जेना कोनो
स्कूलक मास्टर करिया बोर्ड पर उजरा
पथरखड़ीसँ चटिया सबकेँ रेखागणित
पढ़ौने हो अथवा लत्ता भिजाय खाप-
रिक पेन परक कारिख बोरि, पाटोकेँ
पोति, मजबूत कचड़ासँ कचड़ि कोनो
प्राथमिक पाठशालाक विद्यार्थी शन-
चरीमे गूड़-चाउरक लोभेँ दू कानसँ
बोस कान धरि लिखि गेल हो, ने तँ
ई बूझू जे हुनका कपार परक दूनु ठोप
लगैत छल जेना "दू बुन्ना दू पासी कः"
हो। से कन्तू भाइ एकान्तमे आङुर
पर किछु हिसाब कऽ रहल छथि—शुक्र
एक, शनि दू, रवि तीन, सोम चारि,

एहो प्रसंगमे सन्तूक कोजागराक
भारदोर मोन पड़लनि... ताहि
कहौक छोटबभना, मुदा हाय-हाय
हाय-हाय! एक एकटा भार जे
सोटल छलैक! मखाने पठीलक तँ
तेरह कूड़ा, बड़का पनवट्टासँ मखान
परसने रहो, पुरुष-पातक फाँफड़,
जनी-जातिक आँचर, नेना-
भुटकाक धड़िया आ धो-ब्रेटीक घबरो
भरि देने रहिएक। इह... ताहि
मे दूधकेँ मोटकऽ आँटि दही जे पौरने
रहथि से खोआक नाक छप दऽ काटि
लैक। कन्तू भाइकेँ बूझि पड़नि जेना
कल्हके गप्प हो। की मनबका देल
टिकरो, खोआ भरल पिडुकिया, गुलाबक
अंतर देल चन्द्रकला, चारि चडे.रा
पकमानतँ छौ चडे.रा मधुर... इह...
खाजा जे छल नेनु सन कोमल, मधु
सन मधुर! मुँहमे दिएक तँ बूझि पड़ैक
मिसरोमे लेपटाय बकेन महिसीक
पसायल दूधक छाल्हो मुँहमे देने होइ।
एतवा मोनमे सोचैत सोचैत कन्तू
भाइक मुँहसँ ढब दऽ एक बुन्द चौको
पर खसि पड़लनि तँ जेना तन्द्रा भंग
भेज होइनि, चारू कात अकचकाकऽ

ताकि बामा हाथक तर्जनीसँ चट
ओकरा पोछैत लगमे राखल गिलासक
पेनीमे लसकल दू बुन्द जलसँ हाथ धो
चौकी तँ पोछि पवित्रताक रक्षा कय-
लनि आ जेना किछु भेवे ने कयल अछि
तेहन सन मुखमुद्रा बनवैत पुनि अती-
तक ओहि मधुर स्मृतिक चमचामे
चुभकऽ लगलाह... केहन रुन् रुन्
रुन् रुन् बजैत पटनिया हलुकाहा
खराम! लौंग, अगाची, छहोड़ा, नारि-
केर सभक बनीजहा गाछ सब...
सेहन्ता होयतनि केहन केहन पाग ओ
धोधिबला सबकेँ।

एतबेमे हुनक बालक जे कलकत्ते
मे वो० ए०मे पढ़ैत छथिन, हाथक
सूटकेश राखि बापकेँ प्रणाम कयलथिन
तँ आशोवादि ठोरक भितरेसँ दैत चट
कहि बैसलथिन—कहऽ काल तँ तोहर
ससुर यौ लम्बा चोंड़ा गप्प हँकैत
छथुन जतेक लम्बा चोंड़ा सरकारी ट्रक
सँ लऽ टाटाक लारो पर्यन्त नहि होइछ
आ बुद्धि एहने भोथ छनि पाकल
अलुआक कतरा बनयबाक जोग जे
एखन धरि ई हो समाद नहि पठोलनि
अछि जे कतेक भार पठीताह। तोहर
विदाइयो रखनहि छथुन। आबहुँ विदा
करथुन की नहि?

बौआ कहलथिन जे हमरालोकनि
लिखि पढ़िकऽ समाजक रोगकेँ दूरनहि
(शेष पृष्ठ २२ पर)

प्रवाहिक पथपर

बिजुली-यंत्र निर्माणक विशाल कारखाना

सम्प्रति भारत अनेक योजनाक संचालन कइ रहल अछि जकर सफलता देशक नव-निर्माणक हेतु बड़ महत्वपूर्ण । यान्त्रिक साधनक अभिवृद्धि नहि कयने हमसालोकनि अपन उज्ज्वल भविष्यक विषयमे निश्चित नहि भइ सकैत छी । एही दृष्टिअँ भोपालमे ८० करोड़ रुपैयाक लागति-पर निर्मित होमइबला 'हैवी एलेक्ट्रिकल प्रोजेक्ट'क पहिल भाग १ जुलाई '६० केँ उत्पादनक हेतु संचालित भेल । कहल जाइछ जे ई योजना भारत-सरकारक सर्वश्रेष्ठ अभिनव अभ्युत्थान-मूलक उद्भावना थिक । प्रथम भागक निर्माणमे २८ करोड़ रुपया खर्च भेल छैक आ ओ अपन नियत समयपर चालू भइ गेल अछि । एहि कारखानामे बहुत भारी 'वोल्टेज', विशाल परिमाणक 'ट्रान्सफार्मर्स' 'स्विचगियर्स' आ 'हाइड्रो-एलेक्ट्रिक जेनरेटर्स' निर्मित होयत । ई कारखाना समस्त एशियामे, अपन ढँगक, सभसँ पैघ कारखाना बनि जायत । अपन देशक हेतु ई आत्म-पूर्णताक महा-सोपान होयत आ आधुनिक अभ्युदयक दिशामे एक बड़ पैघ अध्यवसायक सिद्धि ।

उद्योग-धंधाक उन्नतिमे विद्युत्-शक्तिक प्रधान स्थान । पंचवर्षीय योजना सभमे एकरा बड़ विशिष्ट स्थान देल गेल छैक । योजना सबमे विद्युत्-शक्तिक उत्पादन-आँकड़ाक स्तर एहन राखल गेल अछि जे ओ दिन-दिन वर्धणु उद्योग-समुदायक आवश्यकताक अनुकूल हो । ई निश्चित भेल छल जे द्वितीय योजनामे २.३ मिलियन किलोवाट आ तृतीय योजना मे ५ मिलियन किलोवाट विद्युत्क

उत्पादन हो । चारिम योजनामे ई संख्या बढ़िकऽ १० मिलियन किलोवाट भइ जायत । एहिसेँ ज्ञात होइछ जे १५ वर्षक भीतर एकर आवश्यकता चतुर्गुण-पंचगुण धरि पहुँचत । भोपालक कारखाना तृतीय पंचवर्षीय योजनाक अंतर्धरि प्रतिवर्ष २५ करोड़ रुपैयाक मूल्यक विद्युत् यन्त्र उत्पादित करत । हमर आवश्यकता एहिसेँ अधिक अछि । सम्प्रति दू और एहन कारखानाक रूप-रेखा तैयार कयल गेल अछि जाहिमे पहिल रूस आ दोसर जेकोस्लाविकियाक साहाय्य तथा सहयोगसेँ स्थापित होयत । जखन ई तीनू कारखाना अपन पूर्ण शक्तिसँ, तेजोसँ चल्य लागत तँ ओहि समय भारतमे प्रतिवर्ष लगभग ८०-८५ करोड़ रुपैयाक विद्युत् यन्त्र तैयार कयल जा सकत ।

उद्योग-धंधाक माध्यमसेँ भारतक आर्थिक उन्नतिक दिशामे ई एक विशेष आदर्श उदाहरण आ भारतक आत्म-निर्भरताक दिशामे उन्नति-यात्राक एक प्रशस्त पद-न्यास होयत ।

कन्तू भाइक कोजागरा

(पृष्ठ ७ क शेषांश)

करबैक तँ समाजक उद्धार कोना होय तँक ?

कन्तू भाइ पुछलथिन—कोन रोग ?

“भार-दोर, लेन-देन, वर विदाइ ई सब असार-पसार जे दिन-दिन पसरले जा रहल छैक, तखन समाजक निर्वाह होयतँक ?

“भारदोर, वर विदाइ ई सब रोग थिकैक ? हौ, तोरा सभक बुद्धिमे लाही किएक लागि गेलह ? ई थिकैक शोभा-सुनार । जीवनमे आर होइते की छैक ?

बोआ कहलथिन जे हम साफ शब्द मना कइ देने छियनि जे हमरा ओहि ठाम ई सब किछ, नहि चलत । जँ भार-दोर पठीलहुँ तँ बात केहन दन भइ जायत ।

कन्तू भाइ जेना साओनक पुरिवा मे मकैक खेतक उँचका मचान परसँ उँचायलेमे चितंग भटका खसल होथि । बुमकार छोड़ैत बजलाह—तोरा बुद्धिक बोलमे विद्याक बदलामे बयो तोसीक तेज भरि कइ राखि देने छलह जे तेज सब सठि गेलह आ भरि पेन काटि अँटकल छह ? अपने कोन हल-कौरा लेवऽ गाम दीड़ल अयलाह ? बड़ बुधियारी कयलनि. . . समुरकेँ साफ-साफ कहि देलथिन जे हमरा ओहि ठाम भार-दोर नहि चलत । आब कोजागरा दिन दच्छिन भरसँ मोट-मोट बैसल अलहुआ आनि दैत छिअह तकरा पकाकऽ मखानक बदलामे मखानक पातसँ मुँह पोछि, सोहिकऽ खा लिहऽ आ गौआँकेँ केसौर परसि दिहक ।

बोआ कहिते रहलथिन जे आब समय बदलि गेलैक, लोक सिकस्त भेल जा रहल अछि, ई आइम्बर सव कुटुम्बक बीच समुचित सौजन्य नहि होमऽ दैत छैक, एकरा सबकेँ दूर करब परम आवश्यक छैक, मे लिखले-पढ़ल लोककेँ विचारबाक चाहिएक, ने तँ समाज घोर संकटमे पड़ल जा रहल अछि. . . मुदा कन्तू भाइ तामसेँ थरथर करैत उठि आइलाह आ मिजँ-फराठी लऽ विदा भइ गेलाह जे तँ अननक विसइ छँदैत रहिहऽ, फल्लौ जाइ छथि बाबा वैद्यनाथक शरणमे । कतिका भरि घुरिकऽ हम नहि आयबा कोन मुँह लऽकऽ हम गामक लोकक सोझाँ-मे जायब ? जाहि हाथेँ भरि-भरि पनवट्टा मखान परसलहुँ ताहि हाथक औठा हम कोना गौआँकेँ देखबैक ? बेटा अवाक् मुँह तकिते रहलथिन, हमर भौजी जे बेटाक आगमनक

उल्लासमे खयबाक हेतु झट-पट ठाँव-पीढ़ी करैत छलीह से ठामहि ठामकि गेलीह आ हमर कन्तू भाइ सोजे पच्छिम मेहँ फराठीकेँ जोर-जोरसँ पटकैत, लफरल, आँखिक ओट भइ गेलाह ।

सवाद

(पृष्ठ ९ क शेषांश)

मुदा गरीब लोकक ई कोमल भावना सभ तँ हँवाक वस्तु भेल करैछ कि ने !

ओ सभटा रुपैया बिल्कुल निःस्पृह भइ कइ नितू बाबूक आगामे गनि देलकनि, जकरा ओ काठक सनूकची-मे राखि लेलनि ।

आ...एकदम अन्हरोखे सोनमा हाथमे टीनक बकसा लटकीने सोजे लोहना रोड-टोशन जा रहल छल ।... रस्तामे ओकर यार कैला भेटलैक । “...की रौ ! ..आइये विदा भइ गेलें ? सत्ते जखनि लोक कलकतिया बनि जाइत अछि तँ गामक माया छूटि जाइ छै ।...”

सोनमा ओकरा कोनाक बुझवि-तँक जे ओकरा गामक कतेक ममता छैक !...ओकर आँखि आर वेगसँ डबडवा गेलैक ।

“...यार ! ...की कहवौ...”— भरियायल ठोंठसँ एतवे बाजि सकल ओ—“...गामक ममता ! ...आह ! कलकतोमे तँ गामेक सपना देखै छी ।...मुदा...मुदा...जँ फेर घुरिकऽ गाम आवि सकलहुँ कहियो तँ कहवौ ।”

सोनमा विदा भेल ।...तेजोसँ !... आर डेगगर भइ कइ । मुदा...ओकर पैर कापि रहल छलैक । ...लागि रहल छलैक जेना गाम ओकर पैरकेँ अपन दिशि धिचैत रह्य !...मुदा... मुदा ... ओ... टगमगाइत ...टगमगाइत आगू भागि रहल छल—आगू भागि रहल छल ।

अहीं बर्जत छी जे हमरा भूखन भाइके चोन्हि गेलियनि, मुदा हम कहब जे एखन हिनका चिन्हवाक हेतु अहाँके बहुतो दिन धरि साधना करऽ पड़त । अहाँके ई हो बूझल अछि जे भिनसरेसँ नी बजे धरिक समय भूखन भाइ बाह्यभूमि आ दन्तधावनमे लग-बैत छथि । आजुक युगक तँ यिकाह नहि जे 'बेड टो' चाहियनि । तखन हे भगवान् ब्राह्मणक वंशमे जन्म देने छथिन; जे भगवान कोनो निखिद कोखिमे जन्म दऽ दितथिन तँ ककरो नानाक सक छलनि जे तकरा बदलितथि ? कोनो सुप्रीम कोर्टमे एहि निर्णयक विरुद्ध अपील भऽ सकितनि ? तँ हमर भूखन भाइ दतमनिक बाद अपन फूलडालो उठबैत छथि आ फूल तोड़ऽ विदा होइत छथि । जावत फूल तोड़िकऽ अबैत छथि तावत भौजो म.छ पोसिकऽ रखने रहैत छथिन ।

फूल तोड़वामे ततेक विलम्ब नहि होइत छनि । साढ़े दस बर्जत-बर्जत घूरि अबैत छथि आ एही एक डेढ़ घंटाके अर्ध लेल करवीरक फूल, भगवतीक लेल श्रोद्धूलक फूल, शालिग्रामक हेतु दू टा अमराजिता, महादेवक हेतु आक वा धुयूर, गणेशक हेतु खासक दूबि आ विष्णुक हेतु तुलसी, फेर आन सब देवता लेल



‘हो कन्तू, घरमे जाइ नदी?’

भूखन भाइक असौकर

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

बेलपात आदि सब किछु तोड़ने अबैत छथि ।

आखन आबि भऽ पोलनि, छड़-पोछा लऽकऽ स्नान करऽ चललाह । नोतिशास्त्रमे कहल गेल छैक—
भनिक: श्रोत्रियो राजा

नदी बँधस्तु पंचमः
पंच यत्र न विद्यन्ते
न तत्र दिवसं वसेत् ।
ते तँ पुहखालोकनि नदीक समीप घर बन्हलथिन ! आब भूखन भाइ तकर अनादर कोना करथुन ? ओ सोझे

स्नान कयने आबथु आ दोसर बेर नाद शुद्ध करवाक हेतु गाम-घरक लग-पाससँ भऽ आबथु, जाहिसँ समय बचतनि तँ दोसर-दोसर काज करवाह, मुदा हमर भूखन भाइक उत्तर सुनि लियऽ—

अहाँ मोरे धरि उठिकऽ रटलहुँ
'आर ए टो रँट', रँट माने मूस तँ
बूझल जे गणेशजीक बाहन थिकनि
मूस, तँ अहाँ अव्ययन आरंभ करवासँ
पहिले मंगल कयलहुँ आ फेर कहैत
छिएक 'एच्-ई एन हेन, हेन माने

‘भूखन भाइ आजुक युगक तँ यिकाह नहि जे ‘बेड टो’ चाहियनि, तखन तँ भगवान आहूणक वंशमे जन्म देने छथिन । जे भगवान कोनो निखिद कोखिमे जन्म दऽ दितथिन तँ ककरो नानाक सक छलनि जे तकरा बदलितथि ? कोनो सुप्रीम कोर्टमे एहि निर्णयक विरुद्ध अपील भऽ सकितनि?’—से भूखन भाइ अपन थोड़ेक दिनचर्याक संग पुनः प्रस्तुत भेल छथि अपन चुटुक्का लऽकऽ । सुनि लियऽ हुनक कलकतिया जीवन ।—सं० ।

धारक कात जाइत छथि, आम्हरे फेर नदी दिस गेलाह आ स्नान कयलनि । बारह बर्जत-बर्जत मामपर पहुँचि गेलाह ।

अहाँके होइत होयत जे बड़ दोष-सूत्री छथि । भिनसरे ओतेक काल बाह्यभूमिमे लगविते छथि तँ फेर ओतेक दूर जा कऽ नदी दिस जायब आ स्नान करब समयक अपव्यय करब थिक, मुदा ज्ञान आक योग दऽ कऽ बुद्धिक वुकनीक एक फक्का फाँकि लेब तँ ई भ्रम लगले दूर भऽ जायत । भिनसरे बाह्यभूमि जाइत छथि कोण्ट शुद्ध करऽ आ विजया भवानीक आराधना कयलाक बाद जे जाइत छथि से नाद शुद्ध करऽ । आब कहू जे हमर भूखन भाइ दोषसूत्री को अहाँक बुद्धि भूकम्पक मारल उत्थर पोखरि ?

अहाँ कहब जे जखन घरेमे स्नान करैत छथि तँ पहिलेके खेप

मुगा, अर्थात् स्वतः शालिग्रामक स्मरण कऽ विटामिनक स्मरण करैत छी, तखन शास्त्रक मर्म कोना बूझबैक ? हमरा भूखन भाइके विटामिनक कमी न भेलनि ने एहि वृद्धारीयो वयसमे होयतनि । शास्त्रमे स्नानोत्तर फूल तोड़ब निषिद्ध छैक तँ पहिले खेप स्नान कयने ओताह से नहि होयतनि । तखन रहल लग-पाससँ नाद शुद्ध कऽ अववाक विचार, से एक बेरि संयोगसँ भूखन भाइके हमर कन्तू भाइ आग्रह-पूर्वक कजकता लऽ गेलथिन सोइह सालक रोदोमे । कहलथिन—‘ओहि ठाम पाठ-पुरस्चरणमे कतहु लगवा देव तँ कोनहुँना ई अकाल खेपि लेब ।

जयबाक हेतु तँ भूखन भाइ चल गेलाह, मुदा एको दित रहि नहि सकलाह । कारण जे जखन बाह्य-भूमिक प्रश्न सोझामे अयलनि तँ कन्तू भाइ देखा देलथिन प्रैखाना ।

हमर भूखन भाइ फानि उठलाह—
'हो कन्तू ! घरमे नदी फिर गऽ ?'
कन्तू भाइ कहलथिन जे ई तँ शहर बाजार थिकैक, एहिठाम दू कोस बाहर जायब से वनत ? एहि ठाम एहिना होइत छैक ।



आखन आबि भाइ पोलनि ।

भूखन भाइक लहरि तरवासँ चललनि से मगजपर पहुँचि गेलनि । कहलथिन—‘सोआइत कलकतामे रहने लोक ढाबुस बेङ जकाँ पोयर भेल गाम जाइत अछि । हो कन्तू ! हम रोगी छी जे घरेमे नदी फिर । हम मुँह मारब तोरा कलकताके । कहू तँ एक कातमे भानसक घर आ आ दोसर कातमे नदी फिर ? ई नारकीय जीवन बितयबासँ नीक जे भूखे टटाइन रही । शहरक लिखल-पढ़ल लोककेँ स्वच्छतापर निबन्ध लिखबाक हेतु कहल जाइनि तँ सात-पातमे लिखि जयताह—एना करक चाही तँ ओना करक चाही आ नदी फिरताह आखनमे ।

भूखन भाइ तुरत अपन धौती-लोटा, पोथी-पतड़ा बन्हलनि आ गाम चल अयलाह । आब कहू अहाँ जे गाम-घरक लगमे बाह्य-भूमि कोना जाय ? तँ हमर भूखन भाइ दीर्घसूत्री कथमपि नहि छथि । हिनक फुर्तीक तुलना कऽ सकैत छी घड़ो क घंटाक सुईसँ । ओ कहैत छथिन जे आजुक युगक लोक सेकेन्डक सुई जकाँ छद-छद करैत रहैत अछि तँ सेकेन्डक सुईसँ (घेष पृष्ठ २० पर)

महाकवि कालिदास

(पृष्ठ ८ के शेषांश)

मिलैत-जुनैत उग्रस्थित कऽ कऽ पश्चात् फेरसँ कुमारसंभवक उदाहरण उपस्थित करव । ईश्वर कृष्णक सांख्य-कारिका (४) मे ई निदिष्ट अछि जे “दृष्टमनुमानमाप्रवचनं च सर्वप्रमाण सिद्धत्वात्, त्रिविध प्रमाणमिष्टं प्रमेय सिद्धिः प्रमाणाद्धि ॥”

एहिसँ कविकुलगुरुक निम्न-लिखित श्लोकार्थमे जे कि भगवान् विष्णुक स्तुतिमे देवतालोकनिक द्वारा ओ कहैत छथि समूल सामंजस्य अछि । श्लोकार्थ अछि ई जे हे भगवन् ! अनेक ई प्रवृत्त ऐश्वर्य नृपों आदि जलन आरिमेय अछि, तखन अनुमान एवं शब्द प्रमाणसँ साध्य भेतिहार अनेक तँ गप्पे को ? अर्थात्—अने तँ आरिमेय छ। उग्रयुक्त प्रमाणपरक ई चर्चा सांख्यदर्शनसँ भिन्न कहल जा सकै छ का ? का अनुमान, शब्द (आत्मवचन) ई ज्ञान प्रमाणन निर्देश दर्श सांख्यक नहि कहल जा सकै छ ? उक्त अर्थात् उग्रयुक्त श्लोक ई अछि—

“प्रत्यक्षोऽप्यपरिच्छेद्यो—

मह्य दिनहिमा तव ।

आप्रवागनुमानाभ्यां—

साध्यं त्वां प्रति का कथा ॥

—रघुवंश २०।२८

यदि एहि श्लोकमे सांख्यदर्शनसँ भिन्न अन्य दर्शनकेँ महाकवि आधार बनि-विद्यथित न्यायक उपमान एवं मोमासा शास्त्र तथा वेदान्त दर्शनक क्रमशः अर्थोपति एवं अनुसलब्धि आदि प्रमाणो एहिमे जोड़ि देने रहितथि ।

आब कुमारसंभवक एक अनुष्टुप् श्लोक देखू, जाहिमे महाकवि मुख्य-मुख्य ओर सांख्यदर्शनक कारिकाक सिद्धान्तक प्रतिपादन कऽ देने छथि । जकर अर्थ ई अछि जे लोक अहोकेँ भोग एवं मोक्षक हेतु पुरुषकेँ प्रवृत्त करौनिहार मूलप्रकृति कहैत छथि तथा ओ उदासीन पुरुषो अहो मानल

जाइत छो, जे ओहि प्रकृतिक दर्शन करैत छथि । श्लोक ई अछि—

“त्वामामनन्ति प्रकृतिं

पुरुषार्थप्रवर्तिनीम् ।

तद्गतिं नमुवासीनं—

त्वामेव पुरुषं विदुः ॥”

एहिसँ ई स्पष्ट भऽ जाइछ जे प्रकृतिये सब किछु कर्मनिहारि आ करौनि-हारिथिकोह, पुरुष तँ निलेय छथि; ओ किछु करैत नहि छथि । प्रकृतिये कर्तृत्व शक्ति प्राप्त कऽकऽ पुरुषक मोक्षक हेतु अनेक प्रयत्न करैत छथि । यह अर्थ सांख्यकारिको कहैत अछि—

“प्रति पुरुष-विमोक्षायं—

स्वार्थं इव परार्थं आरम्भः ॥”

अर्थात्—प्रत्येक पुरुषक मोक्षक हेतु स्वार्थ जकाँ प्रकृति सभ प्रयत्न पुरुषकेँ हेतु करैत छथि । एतऽ एहन शंकाक को संभावने नहि अछि जे प्रवृत्त भेतिहार क्रिया केवल चेतनेमे होइछ, जड़ने नहि । यदि एहन होइत तँ बुद्धिकक लग स्थित होइ अनेतँ आवि चुम्बकमे सटि नहि जाइत । एही प्रसंगक हेतु सांख्य-कारिकाक एक आर उदाहरण उपयुक्त प्रजात होइछ । कारिका ई अछि—

“वस्तु विवृद्धिनिमित्तं

क्षोरस्य यथा प्रवृत्तिरस्य ।

पुरुष विमोक्ष निमित्तं

तथा प्रवृत्तिः प्रधानस्य ॥”

सारांश—जड़ द्रव्य जाहि प्रकारेँ अनेक बच्चाकेँ मोहू एवं स्वस्थ कर-वाक हेतु स्वयं बहार होवऽ लगैछ तद्वत् जड़ प्रकृतियो पुरुषक मोक्षक हेतु प्रवृत्त होइत छथि । कालिदासक उपयुक्त श्लोकक पूर्वार्धमे सांख्यका-रिकाक उक्त अर्थ स्वतः स्पष्ट भऽ जाइछ । अब हुनक उत्तरार्धमे ज्ञापल सांख्यकारिकाक प्रतिबिम्ब तँ देखू—

सांख्यक एक कारिका ई कहैत अछि जे पुरुष साक्षोक रूपमे रज, तमसँ रहित भऽ कऽ भोग एवं मोक्ष उत्पन्न करौनिहारि ओहि प्रकृतिकेँ देखैत रहैत छथि, आर ओ उदासीन

छथि सेहो निम्नलिखित कारिकायसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि । चेतनक सन्निधानसँ बुद्धि प्रभृति जड़ो चेतन सद्भाव भऽ जाइछ एवं उदासीन पुरुषो कर्ता बनि बैसैत छथि । को एहिसँ ई स्पष्ट नहि भऽ जाइछ जे स्वयं पुरुष अवश्ये उदासीन छथि ?

तँ ओ दूनु भिन्न-भिन्न कारिका ई थिक—

‘प्रकृति पश्यति पुरुषः,

प्रक्षरवदवस्थितः सुस्थः ॥”

“तस्मात्तत्संयोगादचेतनं—

चेतनाविव लिंगम् ।

गुणकर्तृत्वेऽपि तथा

कर्तव्य भवत्युदासीनः ॥”

एहि किछु उदाहरणसँ अवश्ये काव्यमर्मज्ञगण जानि सकैत छथि जे कालिदासक सरस, सुकीमल एवं सुबोध्य प्रतिभा गंभीर दर्शनक विचारोकेँ अभिव्यक्त करबामे ओहिना सकल सिद्ध भेल अछि जहिना कि सहृदयकेँ महाकविक शृंगारात्मक भावना हृदयगम करबामे । आस्वा-दन योग्य लेख, चोम, पेय आदि भोज्य सामग्रोक समाने विज्ञ रसिककेँ महाकविक रचनामे भिन्न-भिन्न प्रकारक आस्वाद भेटि सकैत छनि । एहि लघुकाय निबन्धमे तँ हिनक सभ उदाहरण उपस्थित करव कठिन अछि, परन्तु हमरा ई पूर्ण विश्वास अछि जे उपयुक्त उदाहरण जे कि हुनक शृंगारप्रधान काव्यसँ हम उपस्थित कयलहुँ अछि, तावन्मात्रोत हुनका केवल शृंगारप्रधान रचयिता नहि मानि विद्वज्जन एक विशिष्ट विद्वान्क तुरीय अवस्थामे जे दर्शनक उपदेश देब होइछ; तेहन दर्शनिको मानथि तँ कोनो असंगत नहि ।

भूखन भाइक असौकर्य

(पृष्ठ ७ के शेषांश)

अहाँ ई नहि बूझि सकैत छ। जे कतेक बाजल । मिनटक सुइ तँ मिनट मात्रक ज्ञान करबैत अछि, ओकरा जकाँ

चंचल लोक जावनक गभारताकेँ को बुझैत । तँ हमर भूखन भाइक मतें मनुष्यकेँ घंटाक सुइ हाथवाक चाहो, जाहिसँ स्थिरता-पूर्वक सोचि-विचारि कऽ आगाँ बढ़ल आ कत बढिकऽ गेल से लोक नोक जकाँ बुझ-लक । कहू तँ जे हमर भूखन भाइ दोषसूत्री छथि का अहाँक बुद्धि भूक-मक मारल पोखरि थिक, जाहिमे कवितानाक दावा टुटऽ जाइ जकाँ बिच्चे ठाम ठाढ़ अछि आ ताहि जाडिपर बैसल सटिकेटक बिल्होरि उपरसँ उपर किछु उबडिउ उड़ि पड़बवाक लेल लोक पिजा रहल अछि ?

आइ संयोगसँ दुर्गास्थानमे भरि गामक लोक बैसल छथ, नटुआक नाच खतम होमऽपर रहैक तँ भूखन भाइ पटुचलाह । लोक सब मनोरंजनक हेतु कहलकनि—‘भूखन भाइ कोनो चुटुका छाड़िओक ।’

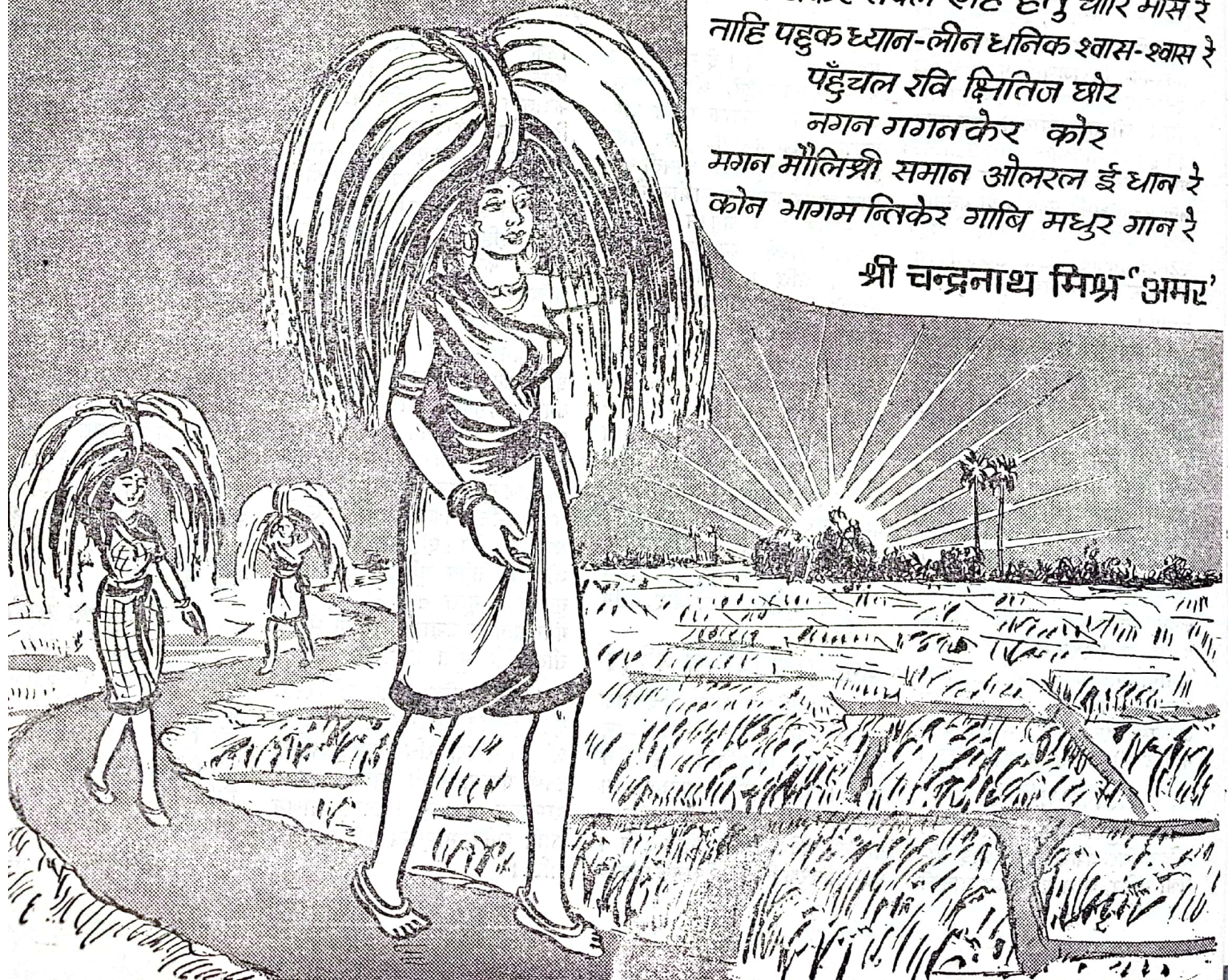
भूखन भाइ कहलथिन—‘तोन चारि साल पहिलुका गप्प थिकैक । एक दिन एक टा ललमुँहिया राहुक छत्रा सन मुँह बला हमरा आहिठाम आयल । काना कटोने रहय, चुको बड़ोने रहय, माँछ मुड़ोने रहय, चरमा लगाने रहय, कुता पहिरने रहय आ धाताक काँचाकेँ वामा पहुँचापर रखने रहय । हमरा भेल जे दुर्गास्थान-मे नाचऽ लेल क्यो ठाक कयने छँक से पहुँचल अछि । हम पुछलएक—‘कय रातिक साइ देलनि अछि आ कतेकर ?’

ओ बकर-बकर हमर मुँह ताकऽ लागल । कहलक जे हम वाट लेवऽ अगलहुँ अछि । अने सभक श्रेष्ठ हम विधान सभाक लेल उमेदवार छ। तँ अने सभक आशावाँद चाहो ।

हम ओकर चालि-ढालि देखलहुँ आ ओकर मोनक मनोरथ सुनलहुँ तँ छानता लागल जे हमरा सभक प्रति-निधित्व एहने स्त्रैण लोक करत गऽ । हम कहलएक—‘अहाँ उमेदवार छ। तँ भगवानसँ हमर प्रार्थना जे उमेद-वारमे अहाँकेँ भगवान सत्तमां तलुपक विग्रह वाक्य देथु । ओ पैर छुबि क प्रणाम कयलक आ चल गेल ।’

अयला जरवने हेमन्त

दुलुकि-दुलुकि चलय चालि
लादल सिर बौभ रे
भूमकि जाय कृषक-वधू
ताकि बाट सोभ रे
मुकुलित मानस-सरोज
आन्दोलित युग उरोज
भडकछ कसि, बन्हल दुहु आँचरकेर घोर रे
गति-तरंग गंगामे उछलल हिलकोर रे
पुरल सकल मनक आश
शशिमुखपर प्रिय-प्रकाश
मन हुलास भरल, देखि भरल पुरल चास रे
भेटि गेल सिद्धि, मैटि गेल सब पियास रे
अयला जरवने हेमन्त
भेल सकल दुरवक अन्त
कन्त जकर तपल यहि हेतु चारि मास रे
ताहि पहुक ध्यान-लीन धनिक श्वास-श्वास रे
पहुँचल रवि क्षितिज घोर
नगन गगनकेर कोर
मगन मौलिश्री समान ओलरल ई धान रे
कोन भागमन्तिकेर गाबि मधुर गान रे
श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'



जँ गाधीजी आइ जीवित रहि-
तथि तँ अल्पसंख्यक वर्गक भाषा ओ
संस्कृतिक दमन कथमपि नहि होइत।
ओ मातृभाषाक पवित्रता ओ महत्ताकेँ
बुझैत छलाह। सभ दिन ओ क्षेत्रीय
भाषाक रक्षा ओ विकासक पक्ष-
समर्थन कयलनि। 'हरिजन' (११-
६-४७) मे एहि प्रसंग ओ लिखने
छलाह जे स्वतंत्रताक बाद—प्रथम ओ
प्रमुख कार्य होयबाक चाही वरदान
स्वरूप प्राप्त क्षेत्रीय भाषा सभक
उत्थानक चेष्टा। "The first
and foremost thing is
to revive the rich pro-
vincial languages with
which India is blessed."
विश्वबन्धुत्व ओ विश्वमानवताक
प्रेमी रहितो ओ अपन मातृभाषा
गुजरातीक यथासाध्य सेवा कयलनि।
आत्मकथा ओ मूल गुजरातीमे लिख-
लनि। संसारक जतेक पैघ साहित्य-

कार भेल छथि ओ अपन मातृभाषाक
माध्यमसँ साहित्यिक सेवा कयने
छथि। यथा कालिदास, होमर, शेक्स-
पीयर, विद्यापति, दंति, गेटे, तात्स्ताय
गोर्की, रवीन्द्र आदि। आ हमरा-
लोकनि जखन मातृभाषा मैथिली-
क उत्थानक चर्चा करैत छी तँ
आरोप लगाओल जाइत अछि संकी-
र्णताक। जखन कि संकीर्ण-भावनासँ
आकण्ठमग्न ओ लोकनि स्वयं छथि।
एकर ज्वलन्त प्रमाण अछि १९५१ क
जनगणना। १९५१क जनगणनामे
तथ्यक संग व्यभिचार कयल गेलैक
अछि। मैथिली भाषा-भाषीक कुल
संख्या ६७,७५७ अंकित कयल गेल
जखन कि केवल दरभंगा जिलाक
जनसंख्या लगभग ३५००००० छैक।
एहिसँ ५० वर्ष पूर्वक जनगणनामे
मैथिली भाषा-भाषीक संख्या १००-
००००० छल। की एहि बीच मैथिली-
भाषा-भाषी जनता मरि-बिला गेलाह?

मचल घमासान रे

मधुर मिहिर, झिहिर-झिहिर बहय मुडु समीर रे
सिहरि-सिहरि जाय पुलक भरल लघु शरीर रे
अनधन लछमीक राज
बाध-बोनमे विराज
साज-बाज साजि-धाजि चलल दल किसान रे
सानसँ कटैत धान मचल घमासान रे
झलकि रहल सगर खेत
कृष्ण, पीत, लाल, श्वेत,
रंग ओ विरंग शीश लैत लहालोटे रे
झूमि-झूमि काटि रहल पैघ आर छोटे रे
झनझनझन स्वर-तरंग
जन-मनमे नव उमंग
संग-संग बिरह तान भरल स्वर वितान रे
मुखर दिशा प्रखर-निसाँ-मतल मन उतान रे
हरल ककर ज्ञान-प्राण
रहल ककर एक ध्यान
आसमान बीच उदित आइ पूर्ण चान रे
कृषक वृन्द लादि चलल धान सिर मचान रे

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

सुन्दरता

रूपवती तुम्र चरण-कमलमे
छी करैत प्राणक हम अप्रण
मृदुल हास संगीत मधुरतम
मोहिनि छबि शतकोटि चन्द्रसम
प्राण विकल अछि तुम्र प्राङ्गणमे
शतदलपर जहिना मधुपक गन
नीलगगन सन उर विशाल अछि
बिम्ब अधर जनु मुधा पात्र अछि
फेनिल यौवन झलकि रहल अछि
उषा काल जहिना हिम-दपण
इंगित नयन तरंगित बानी
पंकज सन वरदायिनि पानी
शान्त सलज्जित ज्ञान पुष्प लखि
मन-भमरा गाबय अभिनन्दन
रूप अहाँकेर अछि रहस्य-मय
भेल अहाँ छी सदा विश्वमय
द्रष्टा उन्मन भेल देखि बहु
प्रकृति नटी सन अनुपम नर्तन
जखन मानस चरण गहँ अछि
हुत्तारो नव गीत कहँ अछि
हर्ष-विषादक दूनू तट डहि
नित अनन्तमे जाइछ तत्क्षण

---प्रोफेसर श्री विश्वनाथ झा 'विषपायी' एम० ए०

वा मातृभाषाक प्रति मिथिलाक लोकक
श्रद्धा-प्रेममे ह्मास भऽ गेलैक ? हमरा
बुझने तँ एहि पचास वर्षक अवधिमे
मिथिलाक जनसंख्या कमसँ कम
इयोढ़ा भऽ गेल होयतैक। आ मातृ-
भाषाक प्रति मैथिली भाषा-भाषीक
दिनानुदिन बढ़ैत श्रद्धा-प्रेमक प्रमाण
अछि आध दर्जनसँ बेसी पत्र-पत्रिकाक
प्रकाशन ओ स्कूल कालेजमे हजारक
हजार विद्यार्थीगणक मैथिली भाषा
ओ साहित्यक अध्ययन करब। तखन
१९५१क जनगणनामे मैथिली भाषा
भाषीक एतेक कम संख्याक की
कारण ? कारण सत्ताधारीलोकनिक
प्रपंच ! हुनकालोकनिक हाथमे
सत्ताक सूत्र छनि आ ओ लोकनि चाहैत
छथि राजकीय कागत-पत्रसँ मैथिली
भाषाक 'नामोनिशान' भेटा देबऽ।

१९५१क जनगणनाक अध्ययनसँ
एक आर खेदजनक तथ्यक उद्-
घाटन होयत। मैथिलीकेँ हिन्दीक
उपभाषा मानल गेलैक अछि;
जखन कि डाक्टर ग्रियर्सन, डाक र
सुनीति कुमार चटर्जी आदि भाषा-
शास्त्रक प्रकाण्ड पण्डित मैथिलीकेँ
एक स्वतंत्र ओ समृद्धिशाली भाषा
स्वीकार कयलनि अछि। एहि सभ
उदाहरणसँ ई स्पष्ट भऽ जयबाक
चाही जे मैथिलीद्रोही हमरालोकनिक
मातृभाषाकेँ मेटयबाक कुचक्रमे
लागल छथि। आब मैथिलीक रक्षा
हमरालोकनिक परम धर्म। एहिमे
राजनीतिक नेतागण, शिक्षक,
विद्यार्थी, साधारण जन समुदाय-सभक
(शेष पृष्ठ १७ पर)

साँझ पहर गामक पछबरिया पोखरिमे हाथ मटियबैत छलहुँ तँ दीनू बाबू भेटि गेलाह । सौराठ सभासँ लोकसभ घुरले छल, तकरे वर्णन कऽ रहल छलाह कि मद्दू, जे कलकत्तासँ घुरले छल, मौजा जुता मचमचबैत घाटपर पहुँचल आ लोटामे पानि भरि पछबरिया-उतरबरिया कोन दिस मोहारपरसँ नीचा झहरि गेल ।

दीनू बाबूकेँ गत वर्षक घटना मोन पड़ि अयलनि, ओ कहऽ लगलाह— ई वैह मद्दू थिक जे यार ककाक ओहि ठाम नार-पातक कुट्टी काटल करय आ माँड़क तौला नादिमे उझिलि सानी बनाकऽ मालजालकेँ खोअबैत छल । आइ बूझि पड़ैत अछि जे यार ककाक धीया-पूता एकरा सोझामे एकर बहिया सन लगथिन ।

हम कहलियनि—‘ककर भाग्य कखन कोना बदलि जाइत छैक तकर ज्वलन्त प्रमाण ई मद्दू थिक ।’

दीनू बाबू गप्पक क्रमकेँ आगाँ बढ़ौलनि—‘एकर बियाह परकाँ साल दछिनबारि गामक डकूबाक ओहि ठाम भेलैक । बाप तँ रहथिन महथू पाठक पाँजिक आ बियाहो रहनि शिलानाथमे, से एहि छाँड़केँ पूजी ओतबे ।’

हम कहलियनि—‘दीनू बाबू, युग ततेक आगाँ बढ़ि गेलैक अछि जे आब आकृति देखिकऽ मुसलमान आ



‘बाबू, अपनेक नाम की थिक?’

हमर खानी दीप!

श्री चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’

पंजाबी मात्रकेँ चीन्हि सकैत छिएक; मुदा एखनो किछु लोढ़ानाथ समाजमे छथि जे शिलानाथ आ महादेव झाकेँ ऊँचि रहलाह अछि ।’

दीनू बाबूकेँ हमर गप्प किछु अनोन बूझि पड़लनि आ वितृष्णाक एक रेखा हुनक आकृतिपर स्पष्ट बुझना गेल । हम क्रमकेँ बदलबाक हेतु पहिलुक प्रसंगक प्रति उत्सुकता व्यक्त कयलियनि । ओ ओहि गप्पकेँ पुनः आगू बढ़ौलनि ।

बोधक उपाधिकेँ व्याधि बूझि, कल-कत्तामे रहनिहार हमरालोकनि यह निश्चय कयलहुँ अछि । हम ओही ठाम कम्पटीटिव एकजामिनेशनमे उत्तीर्ण भऽ बहुत संघर्षक उपरान्त आब स्टोमेक इंचायक पदपर काज करैत छी ।

एक छोट सन प्रश्नक उत्तरमे एतेक विस्तृत विवरण सुनि दछिन-वारि गाम बलाक सिट्टी-पिट्टी गुम भऽ गेलैक । ओ एकर संस्कार देखि चकित रहि गेल । ओकर मोन आरो

मधुवन विहारी शाण्डिल्य अर्थात् मद्दू, झा-ठाकुर आदि संकीर्णताबोधक उपाधिकेँ व्याधि बूझि अपन नामक आगाँ शाण्डिल्य जोड़ि लेने छलाह आ कम्पटीटिव एकजामिनेशनमे उत्तीर्ण भऽ बहुत संघर्षक उपरान्त एम्हर आबि स्टोमेक इंचायक पदपर कार्य करैत छलाह । जखन ओ सभागाछीमे विवाहक हेतु उपस्थित भेलाह तँ एही योग्यताक प्रतापेँ व्यवस्थाकेँ कुरीति मानि मात्र साँठ-राजक हेतु अढ़ा : हजार टाका पौलनि । मुदा विवाहक बाद जखन भेद खुजल तँ ओ सत्यवादी हरिश्चन्द्र प्रमाणित भेलाह । शेष एहि मनोरंजक कथामे । —सं०

‘परकाँ जखन ई सौराठ पहुँचल तँ कोनो बड़का लोकसँ कम एकर टब्बर नहि रहैक । रेशमी कुर्ता, रेशमी तौनी, रेशमी पाग, बड़का शतरंजी, एक उलौंच, बैलगाड़ीपर चाउर-दालि-आलू-कुम्हड़ौरी, आम, अँचार, नेबो, टोकना, बटुक—सभ सामान लादि कऽ लऽ गेल छल ।’

एकर डील-डौल देखि दछिन-बारि गामबलाक मोन चपचपयलैक आ देलक एकरो माम लहका । घटकक संग जखन एकरा डेरापर पहुँचलैक तँ पुछलकैक—‘बाबू, अपनेक नाम की थिक?’

‘हमर नाम थिक मधुवन विहारी शाण्डिल्य । अपनेकेँ हमर नाम सुनि कनेक छगुनता भेल होयत, मुदा झा, ठाकुर, मिश्र, चौधरी आदि संकीर्णता

चपचपा गेलैक । पुछलकैक—‘ओतऽ कतेक भेटैत अछि?’

‘कतेक भेटैत अछि से हिसाब छोड़ि कतेक बँचैत अछि से पूछल जाय तँ नीक । कारण, चालीस टाका मासिक मेस चार्ज, पचास टाका मकानक भाड़ा, तीस टाका सवारी, पन्द्रह टाका जलयोग, तीस टाका पान-पत्ती पाकेट खर्च, पचीस टाका हराहरी दोस-महीम आदिमे खर्च, हँस पचास टाका नोकर चाकरकेँ दऽ एक सय पर्येतीस टाका नियमित रूपेँ बँकमे जमा करैत जाइत छी ।’

दीनू बाबू मुँह बिजकौलनि, भहुँकेँ कपार दिस उठाकऽ लऽ गेलाह आ मूड़ी हिलबैत कहलनि—‘हूँ ।’...माने साढ़े तीन सय मासिक । की कमेताह बी० ए० ए० ए० ।

पुनि दीनू बाबू गप्पकेँ आगाँ बढ़ौलनि—दछिनबारि गामबलाकेँ धनक तँ कोनो कम्मी छैके नहि, मुदा विद्याक अंशमे तँ सब समाज कोदराष्ट्रके पढ़ने अछि । वरक छवि-छटा, बाजब-भूकब, रंग-रूप, डीलडौल देखि आरो प्रभावित भेल । कन्यादान छलैक कण्ठपर । मनहि मन चारि हजार टाका धरि खर्च करबाक मनसूबा लऽ-कऽ ओ गाछी पहुँचल छल । मद्दूक मामसँ पुछलकनि—‘हिनक गोत्र की थिकनि?’

जावत ओ उत्तर देथिन तावत मद्दू बाजि उठल—‘हमर गोत्र तँ नामक संगहि अछि-शाण्डिल्य । हमर पिता महथू पाठक आ मातृक हमर शिलानाथ... ।’

बीचेमे बात काटि मद्दूक माम कहलथिन—‘परिचय-पात्र तँ भल मानसक सम्पत्ति आ जयवारक शृंगार थिकैक । तखन आबक युगमे जे कहल जाय । सुखपुरबला पाँच हजार टाका दैत छलाह, समाज । सभ क्यो ओकील, क्यो प्रोफेसर, क्यो डाक्टर सँह सभ छथिन, मुदा थिकाह निषिद्ध जयवार । कतबो विचार उठि जाउक, मुदा एकदमसँ लोक धोकऽ कोना चाटि लेत?’

घटक बजलाह—‘आहि, ताहि-तरसँ पुनि जे से एहिमे कहबाक प्रयोजन की? ओना तँ थिकाह ई हो बाबू-लोकनि जयबारे, मुदा हिनका घरक क्रिया-मर्यादा दोसरे छनि । बाप पितामहक बसाओल कतेक कन्यादानी सभ छथिन । ई काज कोना होयतैक?’

मद्दू मामक विनु प्रतीक्षा कयने बाजि उठल—‘हम सभ देहाती नहि छी जे मोल-मोलाइ कऽ गप्प स्थिर करब । कन्याक प्रति वा वरक प्रति टाका लैबाक घोर विरोधी छी । तखन कन्याक सेहो तँ अंश ओहि सम्पत्ति-मे रहितै छैक । ताहि हेतु विवेकशील लोककेँ कहबाक प्रयोजन की? से कोन

तरहक उत्साह अपने सभक अछि । ताहिपर प्रकाश देल जाय।'

दीनू बाबू आगू कहऽ लगलाह—जाबत ई गप्प-सप्प भेलैक ताबत तबकदार दस खिल्लीं मय अणाची, लवंग, जर्दा, चून, सुपारी, मसालासँ भरल चमचम करैत पान-दानमे आबि राखि देलकैक । ओतेक काल जे गप्पमे रचि लैत रहलहुँ तकर दक्षिणामे दू गोटा दक्षिणी हमरो पसर लागल । कन्यागत पान सुपारी लऽकऽ हमरा आखि मारलक आ विचारिकऽ अबैत छी से कहि चलि देलक ।

ओकरा गेलाक बाद हम पुछलिकै—'ऐ' ही मडू ! ई स्टोमेक इन्चार्ज जे कोन पद होइत छैक ? असलमे स्वराज्यक बादसँ ततेक नव-नव हाकिम सभ देहातोमे खद-खद करऽ लगलैक अछि जे मोनमे भल कलकत्ता सन पँघ शहरमे कोनो एहने पद भेल होइक ।'

मडू बाजल—दीनू भाइ ! एखन हमरा डेरापर अहीं टा बँसल छी । दखिनवारी गामबलाके नीक जकाँ चिन्हिते छिएक । ओ सभ जेना धन एकट्ठा कयने अछि सेहो सभ बुझलै अछि । ओकरा जँ असल बात कहितिएन तँ केवल पाँजिक नामपर गछितय ? तखन व्यवस्थाक नामपर एको पाइ



हि पकड़ि कात लऽ गेलाह ।'

नहि लेबैक । केवल विवाह खर्च कहि जँ दुइयो हजार देत तँ कऽ लेबैक । एहिमे अहाँ जोर लगा दियौक तँ एक सय टाका अहाँकेँ देब । जँ एहिसेँ बेसी बडौलहुँ तँ पाँच रुपैयाँ सँकड़ अहींक थिक ।'

हम कहलिकै—'ओ सभ अछि लण्ठक सरदार । पाछाँ हमरेपर सभ कुमह झाड़ऽ लागय तँ तो' सभ रहबहु कलकत्ता, हमर रक्षा एहि ठाम के करत ?'

'कुमह की झाड़त ? अहाँ फूसि बात एको टा ने बाजू । हम जे कहलिकै अछि तकरे दोहरा जाइ । जे हमरा वाक्यक अर्थ नहि लगलनि तँ ताहिमे ककर दोष ?' मडू बजैत गेल । 'आम-दनीक संबंधमे फूसि कहब ने केलिकै अछि । जे काज करैत छी से स्पष्ट शब्दे' कहलिकै अछि । तखन की समाज नहि छैक ?'

हम ओहि ठामसँ उठि दखिनवारि गामबलाक डेरा दिस चललहुँ । किछुए दूर गेलहुँ कि ओहि दूनूकेँ अबैत देखलिकै । हमरा देखैत देरी घटकराज बाँहि पकड़ि कात लऽ गेलाह आ कहऽ लगलाह—'अपनेसँ लाथ कोन, चारि हजार ई खर्च करताह से सर्व' कत्व व्यवस्थासँ लऽ वर विदाइ धरि । मुदा हुनका सभक संकेत पाँच हजार भेल अछि । आब जँ अहाँ पड़िकऽ ई काज करा दियनि तँ हमरा एक सय गछलनि अछि ताहिमे पचास अहींक । हँ तीन हजार नगदसँ कम जतेक करावी ताहिमे पाँच रुपैयाँ सँकड़ अहाँक । तखन शुचि-आचार थीत-पातसे कोना की तकरा एकदम स्पष्ट कऽ दियौक ।'

हम उत्तर देलिकै—'शुचि-आचार तँ भलमानुसक होइते छैक उत्तम, तखन थीत-पातमे तँ ओ सभ महादेवे होइत छथि, मुदा एहि तीन चारि वर्षसँ जे जमीन उखड़ैत छैक से यैह लैत छथि ।'

दखिनवारि गामबला

पुछलक—'ई कलकत्तामे कोन

काज करैत छथि से अपनेलोकनिकेँ बूझल अछि ?

हम तारतम्यमे पड़लहुँ । ई सभ लण्ठाधिराज अछि, सय ओमहरसँ, पचास एमहरसँ आ ताहिपरसँ पाँच रुपैयाँ सँकड़ तकर लोभ, तँ गोल-मोल कहलिकै—'हमरालोकनिक कलकत्ता तँ गेल छी नहि, कहैत छथि स्टोमेक इन्चार्ज छी । देह-दशा, बाजब-भूकब अपनो देखबे कयलियनि अछि । जमीन जाल कीनि रहल छथि साले साल तँ कोनो काजपर होथु, सुखी सम्पन्न छथि, ताहिमे सन्देह नहि । ई कहल जाओ जे अपने ई काज कोन तरहें करऽ चाहैत छिएक । लोक ओहो एकदम खरा छथि । हमरा जनैत व्यवस्था नहि लेताह । तखन विवाह-दानक खर्च ! से अपनेकेँ देबऽ पड़त, मुदा से तीन हजार धरि बेसीसँ बेसी अपने दियनि तँ हम पड़ी ।

घटकराज बाजि छठलाह—'आहि, ताहि तरसँ पुनि जे से ओहिपरसँ विदाइयो त तेहने चाही । अपने एहिमे किछ कम करबियौक ।'

'चलू, अपना भरि हम चेष्टा करब, अपने अढ़ाय हजारसँ बेसी नहि होइ, हम सन्धारि लेब ।' हम ई कहि झटकि अपना गामक डेरा दिस बढलहुँ । मडूकेँ सब बात बुझा देलिकै ।

जखन दखिनवारि गामबला सभ पहुँचल तँ मडूक माम पहिने झाड़ऽ लगलथिन । हम ताहिपर कहलियनि जे ई तँ अवश्य जे पाँचो हजार अहाँ पबैत छी, मुदा ई हो गप्प तँ व्यक्तिकेँ देखिकऽ होइत छैक । हिनकालोकनिक घरक क्रिया-मर्यादा दोसर छनि, ताहि सभ बातकेँ ध्यानमे राखि तखन जे बजबाक हो से बाजू ।'

मडू चट बाजि उठल—'हमरा लोकनि सौराठक मर्यादाकेँ बसौली हाटक निकृष्टतामे नहि बदलऽ चाहैत छी । एक पाइ व्यवस्थाक नामपर क्यो लेताह तँ हम विवाह नहि करब ।

हमरालोकनि शपथ लऽ चुकल छी । तखन हम भाइमे एकसरे आ हमरा माइक मनोरथ साँठ-उसारक बेसी ते' एक ठाम खर्चक हेतु तीन हजार टाका दऽ देथि तँ कराउ गऽ सिद्धान्त ।'

हम कहलिकै—'मधुवन विहारी बाबू, भेल अहाँक तीन हजार, मुदा जे हेतु ई अपने पहुँचल छथि ते' हमरालोकनिक दिसस पाँच सय हिनक विदाइ । हम जाइत छी सिद्धान्त कराबऽ ।' दखिनवारि गामबला अढ़ाय हजार गनि देलकैक । सिद्धान्त भेल, वरिआती सजल । विवाहदान भऽ गेलैक ।'

हम पुछलियनि—'अहाँकेँ हाथ लागलकी नहि ?'

दीनू बाबू कहलनि—'एक सय एमहरसँ आ पचास ओमहरसँ तँ तुरत भेटि गेल, मुदा पाँच रुपैयाँ सँकड़बला हिसाब दूनू दिसुक बाँकिये रहल । तथापि हम अपनाकेँ ओहि दिन हाइकोटक बालिष्टर बुझलहुँ । कारण, एक-डेढ़ घंटाक मेहनतिमे डेढ़ सय बहुत भेल । बूझह तँ जिनगीमे पहिल आ अन्तिम एहन कमाइ छल ।'

हम पुछलियनि—'बादमे गप्प फुजलैक की नहि ?'

दीनू बाबू कहलनि—'आहि बा, ... दखिनवारि गामबलाकेँ जखन पता लगलैक जे पहिने ई कलकत्तामे भनसीयाक काज करैत छलाह आ बादमे अपन होटल फोलने छथि तँ दोसर यात्रामे पुछलकैक—'ओझाजी, लाख ब्राह्मणक बीच अपने एतेक मिथ्या बजलहुँ ?' ताहिपर मडू उत्तर देलकैक—'हम स्पष्ट शब्दे' कहने छलहुँ जे हम स्टोमेक इन्चार्ज छी । यदि हमरा वाक्यक अर्थ अपनेकेँ नहि लागल तँ एहिमे हमर कोन दोष ?' मुदा शहरमे रहने लोक कतेक चरफर भऽ जाइत अछि ।

हम कहलियनि—'ते' ने लोक कहैत छैक जे नहि पड़ी तँ शहरो घूमि ली ।' . . .

बसन्त पंचमीक दिन हमसभ ज्ञानक देवी श्री सरस्वतीक पूजा करैत छी । ई पर्व भारतवर्षक अपन विशेषता रखैत अछि । धन आ शक्तिक विभिन्न देवताक पूजा प्राचीन ग्रीस, रोम, मिस्र आदि-आदि देशमे होइत छल—प्रायः एखनो होइते अछि । किंतु विद्याक अधिष्ठात्री सरस्वतीक पूजा प्रायः हमरे टा देशमे होइछ । यद्यपि ई पूजा आब भारतेतर देशमे सेहो होमस लागल अछि, किंतु ओहू ठाम पूजा भारतीय छात्र एवं सम्प्रदाय करैत छथि । आब तँ ई पूजा इंगलैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, रूस, चीन, जापान, अफ्रिका, आस्ट्रेलिया एवं अन्यान्य देशमे होमस लागल अछि ।

आइ विश्वमे, जखन कि धन आ शक्तिक आराधना जीवनक उद्देश्य मानल जाइत अछि, वर्षमे एक दिन हमरालोकनिकेँ एहि पर्वक (सरस्वती पूजा) बहानासँ एहि बातक स्मरण भऽ जाइत अछि जे धन आ शक्तिक अतिरिक्त एक दोसर वस्तु अछि जे प्रार्थनीय अछि । आ ओ प्रार्थनीय वस्तु अछि विद्या । हमरालोकनिक पुरखाकेँ एहि बातक पूर्ण रूपसँ ज्ञान छलनि जे विद्याकेँ धनसँ सर्वदा सर्वोपरि मानलनि । आ विद्याकेँ धनक मान्यता देलनि । हमर प्राचीन इतिहासमे ई उदाहरण भरल पड़ल अछि जे कतेक व्यक्ति, जे विद्याक धनी छलाह, धनक वा धनीक कहियो मोजर नहि देलनि । हुनका ई बात पूर्ण रूपसँ ज्ञात छलनि जे “स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते” तँ एहि विद्याक अधिष्ठात्री देवीकेँ हमरालोकनिक सालमे एक दिन स्मरण कय “महा जनो येन गतः स पन्थाः” क उक्तिकेँ पूर्ण रूपसँ चरितार्थ करैत छी ।

ज्ञानक देवी माता सरस्वतीक विषयमे बहुत किछु ज्ञातव्य बात अछि । हिनकर विभिन्न रूप छनि ।

विद्याक देवी शारदा

श्री कालीकान्त भा नी.ए. डिप.जर.

लिग पुराणमे ज्ञानक देवीक वर्णन एहि प्रकार अछि—

ब्रह्मणः पुत्रकामस्य
ध्यायतः परमेष्ठिनः
प्रादुर्भूता महानदी
विश्व रूपा सरस्वती !

एतऽ हम माता सरस्वतीकेँ विश्व रूपाक रूपमे देखैत छी । किंतु शांति-पर्वमे एक विशिष्ट प्रकारसँ ज्ञातव्य बात अछि—

आत्मानमात्मना दंड-
नीतिदेवी सरस्वती ।

एहिसँ ज्ञात होइछ जे दंड नीतिक एहि सबसँ सिद्ध होइछ जे सब देवी

सृष्टिमे एहि देवीक हाथ छलनि । असुर नाशक बाद देवतागण जखन चण्डिकाक स्तुति कयने रहथि तँ ओहिमे सरस्वतीक नाम आयल छलनि । ई वागधिष्ठात्री देवी छथि । कुक्षेत्र युद्धक आरम्भमे अर्जुन जखन देवीक स्तुति कयने रहथि तखनो माता सरस्वतीक नाम आयल छल ।

स्वाहाकारः स्वधा चैव
कलाकाष्ठा सरस्वती
सावित्री वेदमाता च
तथा वेदान्त उच्यते !

ज्ञानदा सरस्वतीक समस्त ज्ञान-किरण ककरो हेतु प्राप्त करब असम्भव, मुदा बिना हुनक कृपाकेँ मनुष्य बनल रहब सेहो असम्भवे । एही लालसासँ लोकमे विद्यादेवीक आराधना प्रशस्त भेल अछि जे लोक समुचित ज्ञान प्राप्त कऽ सकय । —प्रस्तुत लेखमे ज्ञानदा-शारदाक अर्चनाक आवश्यकता एहि हेतु देखाओल गेल अछि जे एखन ओकर कतेक आवश्यकता अछि । —सं०

एक परमशक्तिक विभिन्न आविर्भाव छथि ।

माता सरस्वतीक बहुत विशेषण छनि । शुक्लवर्णा, वीणा-पुस्तक-धारिणी, वागधिष्ठात्री देवी, आदि-आदि ।

जकरापर एहि देवीक कृपा होइछ ओकर ज्ञान देश आ कालमे आवद्ध नहि रहैत छैक । जेना-जेना ओ ज्ञानक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि तेना-तेना ओकरा निस्सीमताक संसार बूझि पड़ैत छैक । सुकरात सन पैघ दार्शनिक मरबाक किछु दिन पूर्व बजलाह जे ‘हमरा एकेटा वस्तु नहि अबैत अछि आ ओ ई जे हमरा किछु नहि अबैत अछि ।’ एही प्रकारेँ न्यूटन सन पैघ वैज्ञानिक मरबाक किछु दिन पूर्व कहलथिन जे “ज्ञानक सागर वहि रहल अछि आ हम ओकर कछेड़पर ठाढ़ भऽकऽ केवल घोंघे खुरचन बिछैत रहलहुँ ।”

स्पष्ट अछि जे ज्ञानदा सरस्वतीक समस्त ज्ञान-किरण ककरो हेतु प्राप्त करब असम्भव, मुदा बिना हुनक कृपाकेँ मनुष्य बनल रहब सेहो असम्भवे । एही लालसासँ लोकमे विद्यादेवी सरस्वतीक आराधना प्रशस्त भेल जा रहल अछि जे लोक समुचित ज्ञान प्राप्त कऽ सकय ।

जय गण-भारति !

जन-मन-हारिणि जय गण-भारति सातो स्वरमे बाजय
सोनक आखरमे लिखि पांती नवयुग आडन साजय
सुवत भेल नहि केवल मानव
मानवता से संगे
जकर चरण-ध्वनि कलकल करइछ
उच्छल जलधि-तरंगे

अन्तर्नयन फुजल जग जागल जूझल जन बड़भागी
अरपल तन-मन-प्राण सहित कत छल दलितक अनुरागी
तकरे चरण - चित्तपर चलइछ
युगक मनक अभिलाषा
दिन दिन अन्तर्बल बढइत अछि
बढइछ सूतल आशा

जय स्वतन्त्रते सुवित्तायिनी जन-जन-मनमे जागू
रण-वण्डी छथि हाथ जोड़िकऽ ठाढ़ि अहीकेर आगू
जन्मत जनमत नमत अहिंक लग
बड़बड़ विश्वविधाता
जय स्वतन्त्रते शान्तिदायिनी
गाबथि भारत माता

हरखक नोरे चरण पवारथि पुलकित शिशिरक रानी
जय स्वतन्त्रते बरजि रहल छथि पर्वतराज - हिमानी
बदलि रहल अछि जगतक कण-कण
बदलत सभ परिभाषा
जय स्वतन्त्रते गर्जन-ध्वनि सुनि
भागल मनक निराशा

घर-आडनमे बरसि रहल अछि शान्तिक शीत-फोहारा
जय स्वतन्त्रते पजरि, उठथि नहि युद्धक आगि-झोकारा
—श्री चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’

हमरा एक टा झोर इति प्लास्टिककेर, जकर रंग एकदम लाल छैक, ओढ़ूलक फूल सन। जखन-जखन एहिपर आखि पड़ैत अछि, एकटा शब्द हमरा मनक टावरक घंटीमे टन्-टन्-टन् बाजि उठैत अछि। ओ ध्वनि अन्तरक कानमे एक माधुर्यक भाव उत्पन्न कऽ दैत अछि, जेना दर-भंगाक विश्वेश्वर-पैलेसक टावरक घंटी पन्द्रह मिनटपर प्यानोक ध्वनिमे बाजि उठैछ-टन्-टन्-टन्-टन्-टन्..! आ ओहि मधुर ध्वनिक संग जेना एक संगीतमय वातावरण शून्य वायुमे सृष्ट भऽकऽ विलीन भऽ जाइछ तहिना ओ एक शब्द हमरा अन्तरक वातावरणमे एक मधुर संस्मरणक स्मृति जगाकऽ स्मित हास्यक सृष्टि कऽ दैत अछि।

यद्यपि आरो कैक गोट शब्द ओही स्मृतिक संग स्मृति-पथपर नाचि उठैछ, जेना-केटो-बड़ो, ढावा, बुलन्द च्या, ओ ताहि संग अनेक घटना पूस-माघक धौन्ह जकां मानस-क्षितिज-पर लागल प्रतीत होमऽ लगैछ, मुदा एहि ललका झोराके देखला सन्तां जे शब्द स्मरण होइछ ओ अविस्मरणीय बनल रहत।

हमरा अपना पिताजीक संग उत्तर-भारतक बहुतो देशी-राज्यक भ्रमण करबाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि, मुदा ताहि दिन भ्रमणक महत्व एतवे बुझैत रहिएक जे रेलगाड़ीपर खूब चढ़लहुँ आ खूब सुन्दर-सुन्दर राज-प्रासादमे रहिकऽ राजकीय सम्मानक संग मोहिठामक बड़का-बड़का महल आ सजल-धजल बजार देखलहुँ। भ्रमण जीवनक संस्कारमे एतेक सहायक होइत छैक; ज्ञानवृद्धिक एक बहुत पैघ साधन थिक आदि बात बुझितो नै रहिएक। एतेक होइतो दुर्भाग्यवश जयपुर जयबाक सुअवसर नहि प्राप्त भेल छल। केवल सुनल छल जे जयपुर भारतवर्षक पेरिस थिक। एतेक



श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

सुव्यवस्थित, स्वच्छ ओ योजनाबद्ध क्रमे बसल भारतक कोनो नगर नहि अछि। कोनो यात्रासँ घुरलापर श्री ओझाजी (श्री लक्ष्मणदा, नबानी) जयपुरक चर्चा करिते छलाह।

जयपुर देखबाक आकर्षण एक एहि कारणे छल, दोसर कारण छल मैथिली-साहित्यक विकासमे जयपुरक महत्त्व। मैथिलीमे पत्रकारिताक इतिहासक पहिल न्यों जयपुरमे पड़ल छल आ सर्वप्रथम पत्र मिथिला हित-साधन १९०५ ई०मे विद्यावाचस्पति स्व० मधुसूदन झाक सदुत्साहे ओ स्व० रामचन्द्र झा अलवर स्टेटक सत्प्रयत्ने एहीठामसँ प्रकाशित भेल छल, तेँ मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे प्रवेश कयलाक पश्चात् मिथिलाहित-साधनक अंक देखबाक प्रबल उत्कण्ठा हृदयमे छल।

अजमेरमे मैथिल महासभाक अधिवेशन भऽ रहल अछि आ जयपुर ओही बाटपर पड़ैछ, ई सुनि अजमेर जयबाक लोभक संवरण नहि कऽ सकलहुँ—यद्यपि एतेक दूरक यात्राक

जयपुरके भारतवर्षक पेरिस कहल जाइत अछि। वस्तुतः ओहिठामक भवन-घर ओ बाट-घाटक काट अपन मौलिकता लेने भारतवर्षक शोभा-श्री बनल अछि।—प्रस्तुत यात्रा-संस्मरणमे जयपुरक किछु खाँखो प्रस्तुत करैत साहित्यिक यात्री लोकनिक संस्मरण एहन ढंगसँ कयल गेल अछि जे कयासँ अधिक रोचक लगैत अछि।—सं०

हेतु तैयारी करबालेल जतेक समय ओ अर्थ अपेक्षित होइछ, ततेक पूर्व सूचना नहि भेटि सकल छल जे ओरियान करितहुँ, तथापि दरभंगासँ आदरणीय श्री मधुपजी ओ बन्धुवर श्री शेखरजीक संग जेना-तेना सभक हेतु आर्थिक समस्याक समाधान कऽकऽ विदा भेलहुँ। पटनामे चि० श्री रामदेवजी मात्र संग देबाक हेतु प्रस्तुत भेलाह। एवक्रमे साहित्यिक बन्धुमे पैह चारि व्यक्ति मात्र अजमेरक यात्रा

कयल। बाटमे भेटलाह मैथिली-साहित्य-परिषद्क वर्तमान अध्यक्ष बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंहजी।

श्रीमान् मिथिलेशक पार्षद-लोकनिमे कतेको धुरन्धर विद्वान् लोकनि छलाह। सभ मिलाकऽ चालीस-व्यक्तिसँ अधिके छल होयब। अजमेरक प्रसंग समय पाबि पुनः लिखब। सम्प्रति अजमेरसँ जयपुर हेतु प्रस्थान कालक घटनासँ जयपुर पर्यन्तक किछु संस्मरण प्रस्तुत कऽ रहल छी।

अजमेरसँ जयपुर बेरासी माइल पड़ैछ। जयबाक काल रेलसँ गेल छलहुँ तेँ घुरतीमें बससँ चलबाक निर्णय भेल, जाहिसँ एहि ठामक देश-कोसक दर्शन नीक जकां कऽ सकी। मैथिल महासभाक अधिवेशनमे सम्मिलित होयबाक लेल जतेक यात्रा कयलहुँ अछि, सभ यात्रामे सभसँ अधिक मनोरंजनक साधन रहलाह अछि हमरासभक 'भाइ', अर्थात् वैदिक श्री देवेन्द्रनाथ झा। हिनका सन विनोदी ओ विन्यासी लोकक संग यात्रामे कोन आनन्दक प्राप्ति होइछ ई वर्णनक

विषय नहि, अनुभूतिक विषय थिक । भगवान् अपनोजोकनिके ई सुयोग देखु तँ हमर कथनक मर्म बूझि सकब । से भाइ हमरालोकनिके यात्रासँ पूर्वे अपन 'प्रसादी' हरित-चूर्णक एक फक्की पेंडाक योगमे ई कहि दऽ देने छलाह जे रस्ता-पेंडामे पेंडाक योग अधिक सुखद होइछ ।

संयोग एहन छलैक जे ओ विद्या-पति-स्मृति मासक समय छल । अज-मेरसँ प्रातःकाल आठ बजे बस चलल । एक बसपर सभ गोटाक समावेश नहि भऽ सकल तँ दू बसपर हमरालोकनिक सवार भेलहुँ । समस्त राजस्थानमे ई विशेषता देखल जे, जाहि कोनो सवारी पर रहू, निर्धारित स्थानसँ बेसी एक नैना मात्र नहि बैसि सकैछ, ओ खाहे तांगा हो वा टम-टम, बस हो वा मोटर; तँ बैसबाक असुविधा कतहु नहि भेल । हरित-चूर्णक योग, जाड़क मास, हरित-भरित वन-प्रान्तर, प्रातः-कालीन सूर्यक मधुर मिहिरमे मुस्कु-राइत पार्वत्य श्रृंखला, नयनाभिराम दृश्य आ रसनचौकीमे बाजऽ बलागुम्मा बाजा जकाँ एक स्वरमे गुडुआइत बस ! हमरालोकनिक हृदयमे आनन्द एक हिलकोर मारि उठल आ ओहि स्तब्धताकेँ भंग करैत श्री मधुपजीक स्वर गुन-गुना उठल—“बाजत

द्विग-द्विग धौ द्विग द्विमिया” । हमरा-लोकनिक चारू साहित्यिक बन्धु ओहि गुंजनकेँ स्वरतरंगपर तरंगाधित कयलहुँ । कविकोकिलक शब्दविन्यासकेँ कविचूड़ामणि मधुपक गुंजन स्वर परिधान देलक आ हमरासभक समवेत स्वर नचैत नटुआक धधरा जकाँ चारू भाग छितरा देलक ।

बसमे राजस्थाननिवासी अथवा अन्यदेशीय लोक बहुतो छलाह, जे कार्तिकी पूर्णिमाक अवसरपर पुष्कर-क्षेत्रक स्नान कऽकऽ धूरल छलाह । अपना भाषामे की-कहाँ गप्प करैत छलाह से हमरालोकनिक हेतु अक्षर-मात्र बोधगम्य होइत छल, शब्द एको गोट नहि बुझिऐक । ढौआ-कीड़ी गनब-गूथब, हाथ-मुँहक भाव-भंगिमा आदिसँ बूझि पड़्य जे यात्रा-व्ययक हिसाब फडिङ्गा रहल छथि आ ताहिमे अन्तर पड़लाक कारणेँ विवाद बढ़ि रहल छनि । हुनकासभक विवादमे उच्चरित होमऽबला वाक्य सब कानमे आबि ओहिना टकराय जेना खपरैल घरमे कदाच आगि लगल; सन्तों खपड़ा हड़हड़ा हड़हड़ा खसैत हो । ओही वातावरणसँ मुक्ति पयबाक हेतु प्रायः श्री मधुपजी कविकोकिलक पदक आश्रय लेने छलाह । जहिना-जहिना हमरासभक स्वर मुखरित होइत गेल,

कोलाहलक स्वर मद्धिम होइत गेल । गीतक एक पद समाप्त होइत-होइत पूर्णशान्ति व्याप्त भऽ गेल, जेना सभकेँ सम्मोहन लागि गेल होइक ।

गीत समाप्त भेलापर हुनका-लोकनिक जिज्ञासु भेलाह हमरालोकनिक परिचय प्राप्त करक हेतु, किन्तु भाषा नहि बुझबाक कारणेँ श्री मधुपजी एक्के शब्द दोहरबधिन—‘केटो बड़ो’ । स्वीकारात्मक मुद्रामे मूड़ी डोलौने ओही सब डोला लेखि आ नकारात्मक मुद्रामे मूड़ी डोलौलापर किछु विस्मित भऽ जाथि । परिचय नहिऐ भेल, केवल एतबा बुझबाक योग्य भेल जे एहि संगीतसँ ओही लोकनिक आनन्द उठौलनि ।

एगारह बजे दिनमे जयपुर उतरलापर सभसँ आवश्यक प्रतीत होइत छल ‘शतं विहाय भोक्तव्यम्, मुदा जा धरि कतहु मोटरी-चोटरी फोलबाक, कनेक टाड. पसारबाक जोगाड़ धरा नहि लैत छी ता धरि कोना-की हो । धर्मशाला सभक पुछारि करैत-करैत अंतमे ‘दामोदर धर्म-शाला’ पहुँचैत गेलहुँ । ओहीठाम नगरक विशिष्ट दर्शनीय स्थान सभक विवरण लिखिक मुख्य द्वारपर लटकाओल... सूर्य मंदिर, गलताजी, जन्तर-मन्तर, गेद्वरकी छत्री, आँवेर शीश महल, हवा महल, नाहर गढ़, म्युजियम, राम निवास बाग, गोविन्दजी, जय स्तम्भ आदि आदि । अन्दाज भेल जे दस दिन मास दिन रहिकऽ सभ स्थानक दर्शन नीक जकाँ कयल जा सकैछ, किन्तु एमहर तँ छल सुकठीक बनीज आ पशुपतिक दर्शन । ततेक पलखति ककरा ? तखन तँ ‘यल्लब्धं तल्लब्धम्’; तँ दलक सड़ोर छोड़ी आ चारू गोटे जहाँ धरि घूमि सकी, घूमि आवी ।

हमरासभक संग श्री शेखरजी सन नाटककार, यात्राक आरंभ अभिनयात्मक ढंगेँ भेल । एक आनन्द,

एक उल्लास, एक मनोरंजक वातावरण आदिसँ प्रेरित हमरालोकनिक भोजनालयक उद्देश्येँ चललहुँ । एक व्यक्ति दलमे परम विशेषणसँ विभूषित दीर्घसूत्री छलाह, जनिका डरै हमरालोकनिक छीह कटैत हुलहुँ । वातावरणमे नाटकीयता आनक हेतु पछाति जे दू गोटे बहरपलहुँ से ई कहैत जे ओही हमरे सभक संग घुमताह । ई सुनैत देरी श्री मधुपजी एक गलीमे ओ श्री शेखरजी दोसर गलीमे दर-बर मारि प्रोत्साया गेलाह । पुनः चारू गोटेकेँ एकत्र भेलापर जखन गप्प खुजल जे ई नाटकीय ढंग मात्र छल, तँ भरि पेट ओहि भूखल पेटमे हँसैत गेलहुँ । तावत ठेला-गाड़ीपर बड़ विलक्षण हरियर-हरियर पाकल केरा बेचैत एक गोटे पहुँचल आ तीन अने सेरक दरसँ आठ छिम्मड़ि एक सेर कीनल आ फलाहार कयलहुँ । भोजनालयक कतहु पता नहि ।

ई नगर अद्भुत ढंगपर बसल अछि । जेना मोगल-पठानक घर हो । चारि गोटे सोझ सड़क पूवे-पछिमे आ चारि गोटे सड़क उत्तरे-दक्षिणेँ गाँथल-परस्पर १६ गोटे चौकक निर्माण करैत अछि । चौककेँ एहि ठाम कहैत छैक त्रिपोलिया । प्रत्येक भवन एक रंगमे बनल, प्रत्येक चौक मध्यमे फुलबाड़ी ओ फुहारसँ सुसज्जित कयल । शाही ठाम चौकपर ठाढ़ रहू, बूझि पड़त, एही ठाम छलहुँ अछि । जखन कतेको दूर बीआइत रहलहुँ आ भोजनकतऽ करी से स्थान नहि ताकि सकलहुँ, तँ कतेक व्यक्तिकेँ पुछलियेक । ओ सभ कह्य—‘अजी, ढाबामे जाव ढाबामे ।’ ढावा बुझबे ने करियेक, किन्तु दोसर मंजिलपर बड़का-बड़का अक्षरमे लिखल देखैत छलियेक—महावीर ढावा, हनुमान ढावा, बजरंग ढावा, गणेश ढावा, भीम ढावा, किन्तु ओहिमे प्रवेशक द्वार कतहु देखिए नहि पड़्य । होइत-होइत हनुमान ढाबामे पहुँचलहुँ, गौड़



जयपुरक स्थापत्य-कलाक बानगी; आँवेरक एक मन्दिर



गणतन्त्र दिवस-समारोहमें मिथिली लोकगीत-दलक नेतृत्व श्री विश्वनाथ मिश्र कयने छलाह। ओ प्रधान मंत्री श्री नेहरूके पाग अर्पित कयलनि। ताहा अवसर पर लेल गेल विप्र।

ब्राह्मणक बासा, भात, रोटी, दालि, तरकारी, चटनी, पापड़ आदि भोजन-मे भेटनिहार वस्तु सभ, किन्तु आन ठामक—कलकत्ता, कानपुर, पटना, आगरा आदि स्थानक गौड़ ब्राह्मणक बासा सन पवित्रता नहि। मोन झुझुआयल अवश्य, मुदा पेटक ज्वाला समिधाक हेतु तेना जीह लपलपा रहल छल जे किछु दसक एहि खाधिके ताबत भविष्य दियेक सहै विचार भेल। जाबत हम सब खाक उठलहुँ, ताबत धरि घरमे दम सघने तीन गोटे आसन मारि भात-दालि सरपेटवामे लागल छलाह। ईहोलोकनि अपने दलक छलाह जे अजमेरमे प्रवासी बन्धुक ओहिठाम भोजन करबाक अपराधमे श्रेष्ठजनसँ एहि चारू साहित्यिक बन्धुके गंजन करौने छलाह। अत्युच्च कुलो-द्भव, डबल फटाका चानन-टोप, बेस टोप-टहंकारसँ पूजा कयनिहार, मुदा हाथ धोइत काल हमरा सभक दृष्टिसँ बाँचि नहि सकलाह। अकस्मात् दृष्टि पड़ैत देरी श्री मधुपजी कहि उठलथिन—‘कहल जाय ढाबाक स्वाद। ई बेचारे अपनेलोकनि सन सौजनिया पाबि कृतार्थ छथि, बिनु धोती विदाइ देने अपने सभके नहि जाय देताह।’ ओ लगलथिन कल जोड़ आ ताही द्वारे हुनक नाम नहि

खोलब। ओ ढाबा एखनो ओहिना मोन अछि।

ओहि ठामसँ हमरालोकनि विद्याधरक रास्तामे विद्यावाचस्पतिक पुत्र प० श्री प्रद्युम्न झाजीक बासा ताकऽ चललहुँ। ताही क्रममे जन्तर-मन्तर अर्थात् वेधशाला देखल। यद्यपि दिल्लीक वेधशाला देखबाक अवसर प्राप्त भेल छल, किन्तु ओहि ठाम किछु बुझलियेक नहि आ जयपुरमे एक प्रदर्शक ओहि ठाम छल जे रौदसँ समयक ज्ञान, खगोलक विभिन्न रूपक ज्ञान वेधशालासँ कोना प्राप्त होइछ, देखबैत गेल। चलैत काल किछु पुरस्कार देलियेक आ राज प्रासाद दिस चललहुँ किन्तु बाहरे बाहर देखि सकलहुँ, भीतर जयबाक हेतु ५) टाका फीस छलैक।

जयस्तम्भ तँ बहुत दूरेसँ दृष्टि पथपर आबि जाइछ, हवा महल, शीश महल आदि समयाभावे नहि देखि सकलहुँ मुदा राजस्थान कला प्रदर्शनी ओहि समय जयपुरमे लागल छलैक से देखऽ गेलहुँ, जाहिमे चित्रक प्रदर्शनी अपूर्व मनमोहक लागल। उदयपुर शैली, जोधपुर शैली, मेवाड़ शैली, जयपुर शैली, चित्तौर शैली आदि; जाहिमे बताह

हाथी, राजपुतानाक घोड़ा ओ राजपूती दरवारक हस्तलिखित पाँच सय वर्ष धरिक पुरान चित्र सभ छल। ओही ठाम कागतसँ निर्मित मयूर, परवा, हंस आदि पक्षीक मूर्ति सभ देखल, सेहन्ते किछु-किछु किनितो गेलहुँ। जयपुरक सभसँ विशिष्ट वस्तु होइछ संगमरमरक मूर्ति, पानदान, पथरौटी आदि। तँ हमरालोकनि पाथरक बजार दिस गेलहुँ आ थोड़ बहुत सेहो सब कीनल। एक-एक मूर्तिक कलाकारिता पर इच्छा होइत छल लक्ष-लक्ष मुद्रा पुरस्कार दियेक, किन्तु रहितय ततबा, तँ इच्छे किएक होइत?

भरि दिन चलैत-चलैत ततबा थाकि गेल छलहुँ जे एक डेग उठयबाक इच्छा नहि होइत छल। डेरासँ कतेक दूर पर छी तकर अपना सबके अनुमान छले नहि। एक टा बेस सुन्दर तांगा देखि पड़ल लाल प्लास्टिकसँ छाड़ल; नेनुसन कोमल गद्दी।

श्री मधुपजी तुरत ओहिपर चढ़ि गेलाह। तीन व्यक्तिसँ बेसीके ओ चढ़ऽ नहि देत आ रही चारि व्यक्ति। अन्तमे दू गोटे चढ़लहुँ आ दू गोटे पुनः आगाँ बढ़लहुँ। डेरा ओहि ठामसँ केवल दस पन्द्रह बीघा छल होयत। तीन मिनटमे टमटम ओ पाँच मिनटमे हमसभ लक्ष्यपर पहुँचि गेलहुँ। पाइ लऽ लेलक आठ आना। श्री मधुपजीसँ कहलियनि जे ई पाइ ठिक लेलक तँ ओ उत्तर देलनि—एकर गद्दी तेहन सुन्दर लाल छलैक जे ओही ललकाक लौलपर ई पाइ खर्च कयलहुँ। ई ललकाक लौल शब्द जे ओहि काल हँसीलक से जुनि पूछी।

रातिमे जयपुर स्टेशन अयलहुँ आ पटनाक यात्रा कयल, किन्तु जयपुरे एक एहन स्टेशन भेटल, जकर सौन्दर्य ओ स्वच्छता देखि ओ स्थान छोड़बाक इच्छा नहि होइत छल।

कामना

मिथिला आडन आलोकित भऽ निशिदिन चमकय घर-घर किरण कपाट-रंझसँ अविरल पसरय मृदुल-रश्मि दऽ सकय चेतना जन-गण-मनमे नव जीवन भऽ सकय एतऽ माटिक कण-कणमे मातृभूमिमे हो अनुरक्त सदा नर-नारी निज भाषा - संस्कृतिक उन्नतिक हो अंतधारी विज्ञानक सम्यक् विकास दर्शन-अनुशीलन हो अतीत सम सफल पुनः मिथिला जन-जीवन शंकर सन शिशुयुक्त अंक हो घर-घर जननिक बंदेही सम हो बाला पुनि तिरहुत अबनिक तत्व-विमर्शो मंडन, वाचस्पति सम आबधि मिहिर तिमिर कऽ नाश तनिक यश घर-घर गाबधि

—श्री कृष्णचन्द्र झा ‘चन्द्र’

पीलहुँ तँ पीलहुँ मुदा हमरा नहि लागल अछि

श्री चन्द्रतापस मिश्र 'भारत'

फगुआक दिन छलक, बहुत दिनक बात बिक, 'जातखी' जो साँझ जन गानेसँ पहुँचलाह । भाई छलाह आसन मारि लोढ़ी-सितोदपर बंसल मेहिअबत वक्षिणी, बदामके बिजयाक हरित किन्तु पीताभ मिश्रित किछु बड़का टा गोला पोसि पहिने रखने छलाह । नवतुरिआ छोड़ा सभक बड़िया जुटान छल । बिजया युनिवर्सिटीक दोक्षान्त उत्सवमे होइत उपाधि-वृष्टि पर्चापर लीखि, साँटि सौसे महल्लामे, चर्चाक एक बात, गगतन्त्र दिवसकेर सुन्दर मुहूर्त ताकि जहिना उपाधि वृष्टि राष्ट्रपति करैत छथि । हम छलहुँ लाटामे बिजो गलयबापर मैथिलीके नेता जेना गलबय चाहैत छथि । मुन्नाजी दूधकेर छाल्ही तोड़बाक लेल चुलहे लग लोहियामे थोड़िका भँज' छलाह, भितरक गुठबन्दीके तोड़ल लेल आइ जेना आला कमान जाँच समितिके पठवैत अछि, कतबो अपील और आग्रह, अनुशासन भयक, देखाय थाकि जाइछ, गौरह नहि टुटैत छैक, तहिना ओ छुनूआ दूध, लत्तासन छाल्हीके तोड़िकऽ मिलयबामे एकदम असमर्थ छल । अद्भुत उल्लास छिड़िअथिल छल चारू दिस लाल देह, लाले मुह लाले परिधान सब दिनुके पनितोआमे चुगक जे योग छल ताहीसँ नयनक छल कोर लाल-लाल भेल पछिले मिनिस्ट्रीमे जेना कते लुरिगर सय बनला जे लालबुन्द, एखनहुँ से बनले छथि । वही बीच मूसलचन्द बनल सनक फसम-पात जातखीजी ताहि बीच उनका बनि ठनकलाह, देखिते ओ गोला आर आन-आन उपकरण कियाशील चारि व्यक्ति जूटल जी-जानसँ तड़पलाह, सनकलाह, गरजलाह जोर दसकऽ जेना कोनो बाघ खाय गोली गरजैत हो— "गुहजीक मर्यादा, गौरव, प्रतिष्ठाके अहाँलोकनि सिलपर दऽ पीसि-पीसि पीबि गेलहुँ लिखब-पढ़ब छोड़ि-छाड़ि, लाज-धाल घोष जाय गंगामे भसा देल, गवहा बनि जीबि गेलहुँ" । धूर्तराज भाई हमर परपर नमरि चट्ट कैलथिन प्रणाम बनल विनयकेर अवतार हँ हँ आइ फगुआ सन पावनि छलक, अतः नहि तँ ई वस्तु, भला टपऽ दितहुँ घसरमे ? आजा अपने दिएक एखनहुँ सभ फेकि-फाकि अपनेकेर क्रोध-शोभ सभ किछु उड़ाय दी,



कवि

किन्तु जब भेल अछि बहुत मसाला तभ समतास फकल नहि हाइय ते जे कही । जावत किछु बजबा ले जातखीजी सपरलाह भाई गप्पकेर चाँप देलथिन दोहरायकऽ वक्षिणी, बदाम, साँफ, अन्नजल, दाना संग गुलकन्द देल, कपल श्रम से विशेष अछि पावनि-तिहार जानि अपनहुँ हू प्रोट पीबि सभ टा पदार्थके प्रताद बना देल जाय । आनल अछि, सुजी, मालपूआ लेल चाँज वस्तु हुनूआ, मालपूआ हम बनवैत छी, प्रेमते हँ हँ भाई, घोरि दिखी जातखीजी मानि गेला कहलहुँ ने पहिने जे शिवक अवतार अछि । मुनकी भरैत भाई कतखीसँ काजक दिस हमेंसँलोकनिके पुनि सौम्यक प्राप्ति देलनि । जावत धरि जातखीजी तामकल्प करयि तावत पाँच गोट भात पुनूआ पुनूआ-पुनूआ पका भाई घालू ओ छिम्मड़िकर रतार तरकारी आ बाटी भरि हुनूआ आनि देलथिन राखि आगामे पाँचम मालपूआपर जावत धरि करयि हाथ तावत ओ कारी घसर हरिअरमे बदलि गेलनि गीछीपर बंसल छला लगला चिचिआय— "हाय, कोठापर आनि किएक हमरा बसा देलक उतरब जे नीचा से हायत कोना आब कहूँ सीढ़ी तँ अछिअ ने, दोड़' जो लैक सभ । अर्थ ने तागत जे बात ई भेलैक की जे जातखी जो खाइत-खाइत कूड़ एना उठलाह एकाएक फनलाह पीछीक छोड़ि-छाड़ि तसकऽ व्यवस्था जेना कयने विशाह होथि । हमरा सभ छलहुँ जावत पड़ल छुनुतामे तावत ओ तड़पि बीच चौकपर पहुँचि गेला लोक सभ दोड़ल हुनक भौषण चीत्कार सुनि डाक्टर परोसिया रहथि डरीह संयोगसँ देखि हिनक रूप-रंग, आँखि हुनू लालबुन्द बजलाह— "प्रायः आइ भाइ कतहुँ पोलनिहँ वही घोरि पिया, लेल चारि बुन्द कान मध्य दसकऽ आ ठोकि-ठाकि हिनका जा सुना दिअन" सुनितहि नाम भाइक पुनि गरजला जातखीजी "कोन लड़गावा कहत भाइ हम पोलहुँ हँ" । बिजया युनिवर्सिटीक दोक्षान्त उत्सवमे भाषण करैत छला जातखी जी टाढ़ भेल बिजुलीक खुदसँ डम्फकेर काज लैत जातखी जी नाचि-नाचि गब' छला झुबि-झुबि "कोन लड़गावा कहत भाइ हम पोलहुँ हँ पोलहुँ तँ पोलहुँ मुदा हमरा नहि लागत अछि ।"

एक बेर हमरा कन्तू भाइके भेलनि मलेरिया। मलेरिया ताहि दिनक होइक तीन प्रकारक। ककरो होइक चौठैया, जे चारि दिनपर भूत जकां सवार होइक। हुहुआकऽ घाह चढ़ैक आ भरि दिन भरि रातिमे रोगी-के तेना झमारि दैक जे पुनि तीन दिन होस होयबाक बाट नहि। जा धरि मोन टनमनाइक तावत फेर पार पहुँचि जाइ। दोसर होइक तेहैया। तीन दिनपर लागि अबैक, दस बारह घंटेमे ज्वर उतरि जाइक। एहि दूनुमे जे लागि अबैक से घरभरिक कम्मल-सीरक ऊपरसँ ओढ़ाय दू गोटे दूनु कातसँ दबने रहैक आ ताहिपर बूझि पड़ैक जे भीतरमे १९३४क भूकम्प भऽ रहल हो। आ तेसर प्रकारक होइक सब दिना। कनेक हाथ पयर, नाक कान ठरलैक आ देह गम गमा जाइक, पुनि किछु कालमे साफ, जेना कनहा नक्षत्रक मेघ एक कोनसँ ढनढनाइत उठल, फूही-फाही करैत बिला गेल। मुदा कुसंयमी लोकके तऽरे-तऽर भऽ जाइक भरि पेट पिंही-पेट नमरिकऽ कोहा आ... ग न सुटुकिऽ चोटकल कदीमा।

से हमरा कन्तू भाइके सँह भऽ गेलनि। ई जीहक पातर लोक, जन्मेसँ मछगिद्ध। तँ पोखरि दिस गेलहुँ तँ कतहु खत्तो-खुत्तीमेसँ दू चारि टा गरचुनिये पकड़ि अनलहुँ, कोनो मालजालक घूड़मे पका, नोन-मेर-



दाँत पिसैत बाजि उठलाह

कन्तू भाइक

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

चाइ मखा-मखा खा लेलहुँ। आड-नमे राहल जाइनि पथ्य आ तरघुसकी चलनि अँचारक मसाला पर्यन्त। अंतमे पेट बढ़िकऽ भऽ गेलनि नडाड़ा। बेटा अयलथिन पटनासँ, तखन हिनक पेट देखल गेल। खयलनि गरचुनी आ भऽ गेलनि चेन्हा, बेस पँध, छट-छट करैत। अंतमे निर्णय भेल जे एहि ठाम हिनका संयम करौनिहार क्यो नहि अछि, तँ सोझे पटना लऽ चलल जाय। से हमर कन्तू भाइ पहुँचाओल गेलाह पटना। तीन मास धरि ओहि ठाम रहलाह, मुदा एतबे

तँ कतिकहरसँ चैतावरि धरि, आलूक साना चलल तँ भदवरिया ठड़िया साग धरि पहुँचा देल करनि। लत्ता-कपड़ा तीन पुस्त चलऽबलासभ, डेरा पर पुरना धोतीक लुंगीसँ काज चलबैत। अपने मीठा ऊन तँ बीबी तकर दून। खाली खर्च होइनि एक मात्र। ओकील साहेबके एक टा बाल-विधवा सारि, से परम दुलार, घरवाली हुनक चिर-रोगी तँ हुनकर सेवा-शुश्रूषामे सहायता करबाक हेतु अपना संगहि रखैत। ओकर हुकुम तामिल करक हेतु ओकील साहेब बेहाल रहैत छलाह।

पढ़ल-लिखल लोक 'नागरिकता' शब्दक बेस दोहाइ दैत छथि मुदा नागरिकताक ज्ञानक अभाव जतेक नगरमे आ पढ़ल-लिखल लोकक मध्य पाओल जाइत अछि ततेक गाममे नहि। कन्तूभाइ दुखिताह भऽकऽ चिकित्साक हेतु पटना पहुँचल छलाह, मुदा पेटक पिलहीसँ अधिक हुनक जान खायब आरंभ कयलकनि ग्रामोफोनक निरन्तर रिडिअयनाइ। ओ एहि रिडिअयनाइक कोना उत्तर देलनि से एहि व्यंग्य-कथामे चित्रित भेल अछि।—सं०

दिनमे हिनका भरि महल्लाक लोक भरि पोख चीन्हि गेलनि। एकर भेलैक एक कारण।

पटनामे हिनक बालकक डेराक सटले दच्छिन एक ओकील साहेबक डेरा। ओ ओकील साहेब हाथक सक्कत, मनक उदार आमद मद्धिम, मुदा घरक मजगुतगर लोक। बाप-पितामहक अरजल बँस पँध हाता, ताहिमे एक कात आँटा पोसक कल, एक भाग जारनिक दोकान, एक भाग गाइक घर, एक भाग रिक्साक गैरेज। गोड़ दसेक गाय पोसने, गोड़ दसेक रिक्सा रखने। गायसभ बड़ दुधगरि। एही सभसँ मुख्य आय आ टुकुमु ओकालतियो चलैत।

खर्च-बर्च समटल, भाँटा चलल

ओहि मौगीके एक टा ग्रामोफोन देने आ समय समयपर जाहि कोनो नव रेकर्डक प्रचलन भेल, कतहु लाउड स्पीकरपर सुनलक, की तुरत फरमाइश, फेरतकर पूर्तियोमे ओकील साहेबक कुपणता ताखपर चल जाइनि।

सयोगसँ जाहि कोठलीमे हमर कन्तू भाइ रहैत छलाह, तकर उतर-बरिया खिड़की आ ओकील साहेबक सारि जाहि कोठलीमे रहैत छलथिन तकर दछिनबरिया खिड़की एकदम सोझाँ-सोझी। कन्तू भाइ चिर-रोगी भऽ गेल रहथि, ताहिपर पटना आबि हुनक रुचिपर प्रतिबंध लागि गेल रहनि, से आरो खटखटाह भऽ गेल छलाह। इच्छाक विरुद्ध ककरो बाजब-भूकब, कदब-फानब सभ किछु कदाह

लगैत छलनि आ ओ मौगी सदियन ग्रामोफोनके रिडियन्त रहैत छलि।

एक दिन कन्तू भाइ भिनसरे अपन नित्यकृत्य समाप्त कऽ चन्दा झाक रामायण लऽकऽ मोन बहटारऽ बँस-



अपन जऽन, अपन खर्च

लाह, तावत ओहि कोठलीमे ग्रामोफोन बाजऽ लगलैक—“सावनमे व्याहन आया”। पहिले पद सूनिऽ हिनका छगुनता लागि गेलनि जे साओनमे तँ बनारसी शुद्ध के कह्य, मुसलमानो सभक बियाह नहि होइत छैक, तखन के एहन मूर्ख चपाट ई गीत बनौलक? अस्तु, पहिल बेर गीतक धुनि बाजा-गाजा ततेक बेजाय नहि लगलनि। फेर दोसरो बेर वैह रेकर्ड देलकैक तँ मौगीक सनकपर छगुनता भेलनि, जखन तेसरो बेर वैह, तखन ओकील साहेबपर झुझुझुआलाह आ जखन एतबे जोति देलकैक तखन तँ हमरा कन्तू भाइके तामसे होइनि—अपन मुँह-कान अपने हाथे नोचि ली। अपना कोठलीमे कतबो बड़बड़ायालाह, कतबो हाथ पयर पटकलनि, कतबो-माथ-कपार पिटलनि ओ ‘सावनमे व्याहन आया’ बन्द नहि भेलनि। इच्छा होइनि जे ग्रामोफोनके उठा कऽ रेलवी लेनपर कऽ घऽ दिएक जे चुन्नी-चुन्नी उड़ि जाइक आ ओहि मौगीके दून टाड. पकड़ि उनटे भरे कोनो इनारमे घऽ दिएक जे जँ चीत्कारो करय तँ प्रतिध्वनि पानिमे टकराकऽ सूति रहैक। अपने मोने दाँत पिसैत बाजि उठलाह—“हमर जँ सक चलैत (शेव पृष्ठ २२ पर)।

प्रवाहिक पथपर

भारतक पहिल घड़ी कारखाना

भारतक पहिल सरकारी घड़ी कारखानाक पछिला सप्ताह बंगलौरमे उद्घाटन भेल । प्रथम वर्षमे एतऽ पँसठि हजार हाथक घड़ी बनत आ आगाँ जाकऽ इयूटीक पारी बढ़लापर प्रतिवर्ष दू लाख चालिस हजार बनत । एहि कारखानामे एहूँ अधिक संख्यामे घड़ी तैयार कयल जा सकत ।

एहि कारखानाक हेतु एक जापानी कम्पनी शिल्प सहायता दऽ रहल अछि । चारि वर्षमे घड़ीक अस्सी प्रतिशत पुरजा देशमे बनऽ लागत । ई कारखाना मशीनी औजार कारखानेक सहायक कारखाना होयत । बिहारमे उद्योगक हेतु बिजली

भारत सरकार बिहारक पथ-रातू ताप-बिजली-घरक विस्तार योजनापर विचार कऽ रहल अछि । ई बिजली-घर हटिया, जिला हजारी-बागमे अछि । आरंभमे एहि बिजली-घरमे १ लाख किलोवाट बिजली उत्पादनकरवाक कार्यक्रम छलैक । एहिमे आब ५०-५० हजार किलोवाटक क्षमता क आर तीन यन्त्र लगयवाक प्रस्ताव अछि । एहि प्रकारे बिजली-घरक कुल उत्पादन-क्षमता २५०, ००० किलोवाट भऽ जयतैक । एहिँ राँचीक भारी इंजीनियरी निगम आदि बहुते उद्योगकेँ बिजली भेटऽ लगतैक । ई बिजली-घर तेसर योजनामे बिहार-राज्य बिजली-मंडल द्वारा बनाओल जायत । एहि हेतु १२ कोटि ५० लाख टाका विदेशी मुद्राक प्रयोजन पड़तैक ।

बिजलीक रेल

चौदह सय माइल लाइनपर बिजलीक रेल चलयवाक लक्ष्य छल । एहिमेसँ पूर्वी क्षेत्रमे प्रायः ५०० माइल

लाइनपर बिजलीक रेल चलयवाक कार्य दोसर योजनामे पूरा भऽ जयतैक । राजखरसान-डंगोखापोसी आ आसन-सोल-गोमोक मध्यक शाखासभमे बिजलीक रेल चला देल गेल अछि । दुर्गापुर-आसनसोल, गोमो गया आ आसनसोल-सीनी टाटानगर-राउर-केला शाखासभमे बिजलीक रेल जून १९६१ धरि प्रारंभ भऽ जायत । गया-मोगलसराय आ टाटानगर-खड़गपुर शाखामे बिजलीक चलयवाक कार्य प्रगतिपर अछि । मद्रास-ताम्वरम-बिल्लीपुरम् शाखामे बिजलीक रेल चलयवाक कार्य आब बढ़ाओल जायत ।

कन्तू भाइक कंटर

(पृष्ठ ७क शेषांश)

तँ आइये तोरा यमराजक बेटाक संग समन्ध करा दितहुँ ।

साँझमे बेटा जखन काजपरसँ घुरलथिन तँ कलपि-कलपि अपन मनोव्यथा कन्तू भाइ सुना देलथिन आ संगहि ईहो कहलथिन जे आब हमरा गाम पठा दैह, ई मगहमे जे मरब, ताहिसँ कतेक बेसी नीक होयत अपन जन्मभूमिपर जा कऽ मरब गऽ, अपने गाछीमे ई शरीर ढाहल जायत, जाहि ठाम बाप-पुरुखालोकनि जरल छथि । ई फोनोगिलासवाली मौगी हमरा जीबऽ नहि देत ।

बेटा चुपचाप उठलथिन आ सोझ ओकील साहेबक नेहोरा-पाती करऽ लगलथिन—“हमर बाबूजी दुःखित छथि । अपनेक ओहि ठाम ग्रामोफोन सतत बजैत रहैत अछि, से हुनका अप्रिय लगैत छनि । मनोरंजनक एक टा समय होइत छैक तेँ समय पर बजौलासँ नहि कोनो क्षति, मुदा अति नहि होइक, ततवा कृपा कयल जाय ।”

‘ओकील साहेबक ‘कँसी तेरी रंगत’ बला गप्प । ओ कहऽ लगलथिन—‘ई हमर व्यक्तिगत अधिकार थिक, अपना घरमे, अपन ग्रामोफोन, अपना खर्चपर हम बजबैत छी ताहिमे हस्तक्षेप कयनिहार अहाँकेँ ? अहाँक बाप बड़ खटखटाह छथि तँ एहि ठामसँ चल जायु ।’

हिनक कतबो कहला-मुनलापर ओकील साहेब एहने क्रमपात बनौने रहलाह जेना तोरा किछु होइत छहु, हमरा कुर्थी उलबऽ दे । हमर कन्तू भाइ सभ-किछु सुनिने छलाह । तामस तँ ततेक भेलनि जे गामक डिहवारकेँ जोड़ा छागर कबुला कयलनि । कल जोड़िकऽ कहलथिन—‘एहि उदरीक संगहि जँ एकरा कालापानी भऽ जाइक तँ नटूआ नचाकऽ हम जोड़ा छागर अहाँकेँ चढ़ाबी ।

बेटा जहाँ घूरिकऽ अयलथिन तँ कन्तू भाइ चट दऽ कहलथिन—‘काल्हि बेरुका उखड़ाहा धरि चारिटा बाँस, दू टा जउन आ दू टा मटिया तेलक खाली कंटर मञ्जा दैह । हम एहि लड्ड-टेक हिस्सल छोड़ा दैत छियनि । पहिने हमरा भातिजकेँ एकर अर्थ ने लगलनि । पटना सन नगरमे बाँस आ जउन ताकब कतेक कठिन काज तँयो ओ एतऽ जाओगाइ धरा देलथिन; तखन अपना काजपर गेलाह । साँझमे घुरलाह तँ डेराक आगाँमे बेस उँचगर मचान तैयार । रातिमे दूनू जउनकेँ भोजन देलथिन आ जखन राति एगारह बजलैक, महल्ला शान्त भऽ गेलैक तँ कन्तू भाइ दूनू कंटर लऽ दूनू जउनकेँ मचानपर चढ़ि कंटर पीटऽ कहलथिन ।

कंटर पीटऽ जाय लागल । महल्ला भरिक सूतल लोक, जागल लोक, क्यो आँखि मिड़ैत, क्यो क्षुब्ध, क्यो चकित, क्यो क्रुद्ध, क्यो हँसैत चारू भागसँ जिज्ञासा भरल चित्तेँ जूमि गेल । ओकील साहेब बजैत अपना डेरासँ बहरयलाह—‘महल्ले भर की नींद हराम करना कहाँकी शिष्टता है ?’

महल्ला भरिक लोकक ध्यान जे ओकील साहेब दिस आकृष्ट छलैक से हमरा कन्तू भाइक बहरइते हिनका दिस जिज्ञासु दृष्टियेँ घूरि गेलैक ।

कन्तू भाइ बहुत शान्त चित्तेँ पछिला दिनुक घटनाक वर्णन करैत कहलथिन—अपना मचानपर, अपन कंटर, अपना जउनसँ, अपन खर्चपर हम भरि राति पिटबैत रहब । हमर एहि व्यक्तिगत अधिकारपर हस्तक्षेप कयनिहार अहाँ केँ ?’

ओहि दिनसँ ग्रामोफोनक रिडि-अयनाइ बन्दे भऽ गेल ।

योजना ओ युवक

(पृष्ठ ८क शेषांश)

देशमे आर्थिक स्वतंत्रता ओ योजनाक सफलताक प्राप्ति दिशामे वर्ग संघर्ष एक पैघ बाधक अछि । यथा-धनीक गरीब मालिक-मजदूरक बीच द्वेष ओ वैमनस्य आक्रोश करैत समाजक मूल कारण थिक । जाहिसँ समाज दिनानुदिन पतनोन्मुख भऽ रहल अछि । एहि संघर्षकेँ समाप्त करबाक हेतु विनोवाजीक सर्वोदय यज्ञ चलि रहल अछि । किन्तु एहू यज्ञक सफलताक उषा-किरण निकलबामे संदेह अछि । कारण, भूदान ओ पूजो-दान भलहिँ किछु अंशमे एहि असमानताकेँ नष्ट कऽ सकैछ, किन्तु पूर्णतः समानता तखने सम्भव जखन कि प्रतिव्यक्तिक आय-वृद्धि ओ धनक विकेन्द्रीकरण होयत । ई कार्य तँ योजनेसँ सम्भव अछि । किन्तु ई ध्यान राखक अछि जे विकास-कार्य शांतिक मूल-मंत्रसँ होअय । गान्धी ओ विनोवाक क्षेत्रभूमिमे शांतिक मार्ग उपयुक्त अछि आ यो ने एहि मार्गक उत्तम साधन बूझल जाइछ । अतः सम्पूर्ण युवक समहक कर्तव्य अछि जे एहि पावन उद्देश्यक प्राप्ति हेतु सक्रिय भऽ कऽ अमरूपी अंशदानसँ मूल्यवान सेवा करथि ।

दार्शन

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

भयल इनार सन मोछक झांखुड़-
सैं झांपल मुँह, जेठुआ बिहड़िया
मेघसन कारी गुम्हड़ल आकृति, ओढ़-
नाक मोटा पीठपर लदन, मूडीसँ
कमसँ कम पाँच गुण पँघ लाल-लाल
पीयर-पीयर- कतहु-कदाच उजरो
मुरेठा बन्हन पुरुषवर्ग आ बेस घेरा-
दार घघरा (छोट कपड़ाक अधिकतर),
भरिबाँहि आड़ी, ऊपरसँ ओढ़नी,
केहुनीसँ कब्जा घरि उतारपरक कोन-
दिन ढगक चूड़ी, बड़ी-बड़ी मोटक
काड़ा-काड़ा की, ओकरा हड़ी कहि
सकैत छी—पहिरने भोज्य सामग्रीक
छोट-मोट मोटरी कँखियोने महिलाक
महाल कोनो महामेला दिस उमड़ल
चल जाइत छल। सड़क, गली, स्टेशन,
धर्मशाला, टांगा, टमटम, बस, मोटर
सभ ठाम एके रंग दृश्य देखि पड़य।
जिजासा जागल, प्रवासी-बन्धुसभसँ
पता लागल जे ब्रह्मतीर्थ पुष्कर एहि-
ठामसँ पश्चिमोत्तर कोणमे प्रायः साढ़े
तीन कोस पड़ैत अछि आ देवोत्थान
एकादशीसँ कार्तिकी पूर्णिमा घरि
लाखसँ अधिक संख्यामे लोक पुष्कर
स्नान ओ दर्शन करऽ जाइत अछि।
एमहर तीर्थराज प्रयाग, ओमहर
तीर्थराज पुष्कर।

संयोगवश हमरालोकनि देवो-
त्थान एकादशी दिन रातिमे दरभंगासँ
अजमेरक हेतु प्रस्थान कयने छलहुँ।
द्वादशी कऽ पटना ओ त्रयोदशी कऽ—
कार्तिक धवल त्रयोदशीकऽ—आगरा
ताज महलक प्रांगणमे (जतऽ 'जनम
अवधि हम रूप निहारल नयन न
तिरपित भेल' चरितार्थ होइछ)
महाकवि विद्यापतिक स्मृतिमे बाबू
श्री कृष्णनन्दन सिंहजीक नेतृत्वमे किछु
फिल्म लेलहुँ, जाहिमे श्री मधुपजी,
श्री शेखरजी, श्री रामदेवजी, श्री युग-
पति बाबू ओ बाबू साहेबक मॉडल

पुत्रक संग एक व्यक्ति आरो छलाह।
ओ फिल्म बाबू साहेब लग सुरक्षित
अछि। चतुर्दशी कऽ अजमेर पहुँचल
छलहुँ।

हमरा तँ प्रवासी-बन्धुक दर्शने
तीर्थ दर्शन सन लागल; तथापि ई
धर्म मंडनीमे किएक नहि लूटि लेल
जाय, तँ पुष्कर जयबाक निश्चय
करैत गेलहुँ। पूर्णिमा दिन जन-समुद्र
ततवा उमड़ि आयल छल जे सवारी
भेटव परम दुष्कर भऽ गेल। तखन,
एहि दुष्कर स्थितिमे पुष्कर यात्रा
कोना हो? किछु गोटे तँ श्रीमान्
मिथिलेशक संग पार उतरि अयलाह,
किछु गोटे जमाँतिमे अनेक असुवि-
धाक अनुमानकऽ चुपचाप घसकि
गेलाह। एवं प्रकारेँ दल कैक भागमे
विभक्त भऽ गेल। हमरालोकनिक
जे दल छल ताहिमे मुख्यलोक छलाह
स्वर्गीय गुरुवरपं० त्रिलोकनाथ मिश्र,
पूज्य पं० श्री उपेन्द्र झा, पं० श्री विश्व,
नाथ झा कविराज, भाइ श्री देवेन्द्र-
नाथ झा वैदिक, हम चारू साहित्यिक
बन्धु तँ छलहुँहुँ, किछु गोटे आरो
छलाह। एतवा निर्विवाद जे हमरा-
सभक दल सभसँ बेसी मनोरंजक छल।

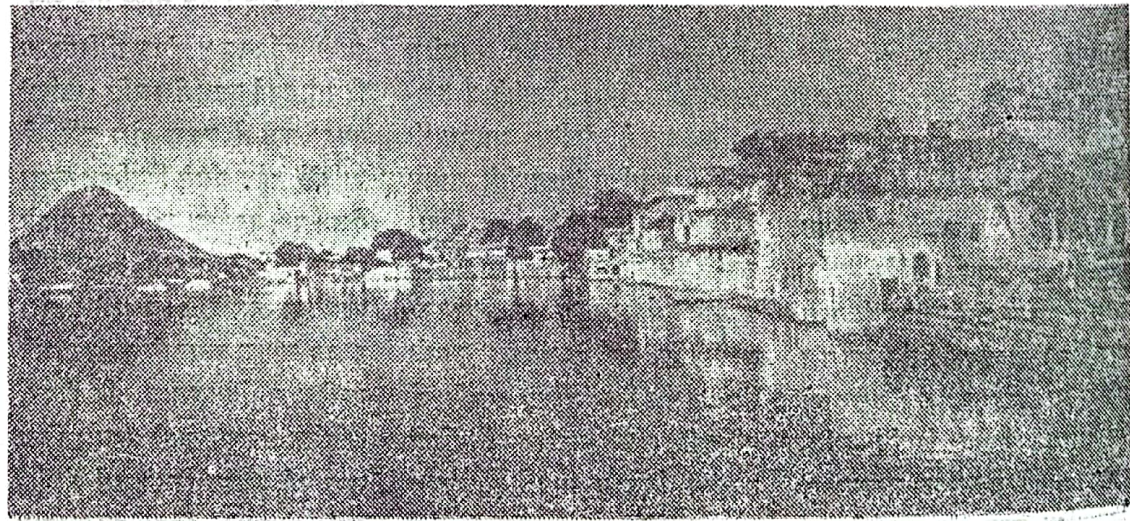
आदर्श नगरक फाटकपर सड़कक
कातमे बैसल-बैसल ओहि दिन एगार-
रह बाजि गेल, मुदा जे कोनो टांगा,
टमटम, बस, मोटर अबैक से आक्रान्त।
ई उल्लेख आनो ठाम कऽ चुकल छी जे
समस्त राजस्थानमे ई विशेषता देखऽमे
आयल जे कोनो सवारीपर निर्धारित
स्थानसँ अतिरिक्त एक दश वर्षक
नेना पर्यन्तकेँ नहि चढ़ा सकैत अछि;
ताहि हेतु अहाँ पाँच बड़बेसी किराया
किएक नहि दियौक। कखनो निश्चय
होइक जे आव आइ धूरि-चलैत चलू,
पुनि कोनो बसक गड़गड़ाहटि सुनि
पड़ैत छल कि सभ हड़बड़ा उठैत
छल—“चलैत चलू, चलैत चलू।”
एहि ‘चलू-चलू’ ओ ‘धूरि जाइत जाँउ’
मे कतेक घीचा-तीरी भेल आ अंतमे
हमरालोकनिमे बहुते गोटे धूरि गेलहुँ।
कारण भेल जे अन्हरोखे चुप-चाप
ससरि गेनिहारक एक दल पुष्करसँ
तखन धूरल आ हुनकालोकनि यैह
कहलनि जे जँ पुष्कर स्नान ओ दर्शनक
हेतु जाइ तँ आजुक गेनाइ निरर्थक
थिक।

अजमेर ओ पुष्करक बाटपर एक
पार्वत्य-श्रृंखला पड़ैछ, जकरा तत्प्रा-
न्तीय लोक अभ्यस्त रहलाक कारणेँ
पैदलो पार कऽ लैत छथि, किन्तु
समतल भूमिक निवासीक हेतु ओ पार

पुष्कर क्षेत्र राजस्थानक
सुप्रसिद्ध तीर्थ थिक। जेना उत्तर-
भारतमे प्रयागक गणना तीर्थ-
राजमे होइत अछि तहिना मध्य
भारतमे पुष्करकेँ तीर्थराज कहल
जाइत अछि। अजमेरसँ ब्रह्म-
तीर्थ पुष्कर पश्चिमोत्तर कोणमे
प्रायः साढ़े तीन कोसपर अव-
स्थित अछि।—प्रस्तुत यात्रा
संस्मरणमे पुष्कर-तीर्थक वर्णन
कयल गेल अछि जे बेस रोचक
अछि।—सं०

करव असाध्य तँ नहि, किन्तु दुस्साह-
सक काज अवश्य थिक।

पुष्कर क्षेत्रक महिमाक वर्णन
ओ उत्पत्तिक कथा पद्यपुराणक सृष्टि-
खण्डमे कहल गेल अछि। एकर
उत्पत्तिक संग पृथ्वीक उत्पत्तिक कथा
सेहो संसक्त अछि। यद्यपि ई मुख्य
रूपेँ ब्रह्माक तीर्थ थिक। किन्तु विष्णु
ओ रुद्रक नामपर सेहो पुष्कर अछि।
एहि ठाम तीन गोटे ताल पड़ैछ-
ज्येष्ठ पुष्कर (ब्रह्मा), मध्य पुष्कर
(विष्णु), ओ कनिष्ठ पुष्कर (रुद्र)।
कनिष्ठ पुष्कर आव बूढ़ा पुष्कर नामेँ
प्रसिद्ध अछि। अछि यद्यपि ओ कनिष्ठ,
तथापि बूढ़ा पुष्कर कहबैछ से उचित;
कारण, बूढ़ानाथ महादेवक नामक संग



पुष्करक एक दृश्य जतऽ बाबन घाट अछि।

जे ई अनुलग्न अछि। पृथ्वीक उत्पत्तिक कथा अनुलग्न रहबाक कारणे वराह भगवानक मूर्ति सेहो अछि।

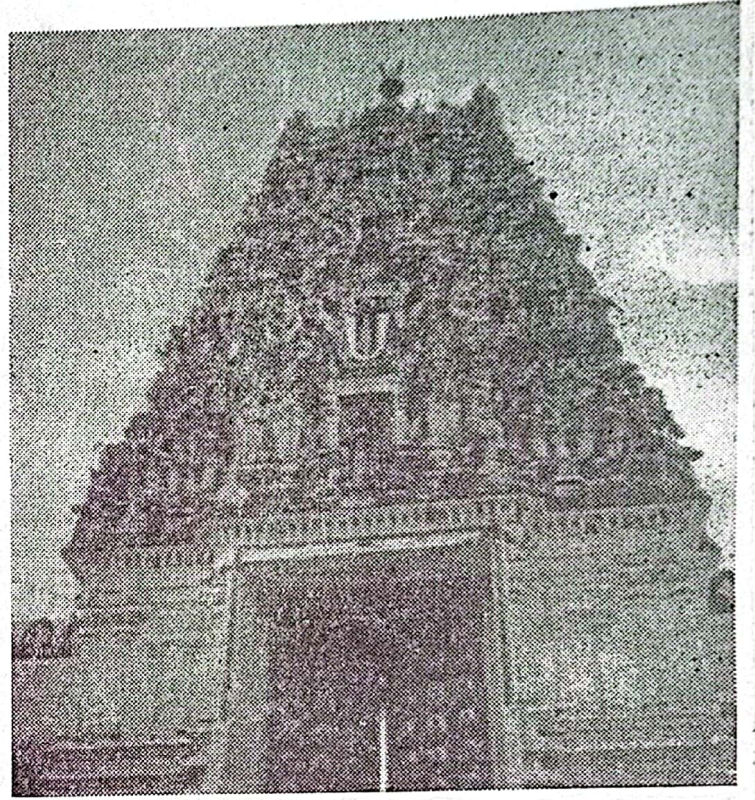
दोसर दिन सबेर-सकाल हमरा-लोकनि पुष्कर विदा भेलहुँ। आदर्श नगरसँ अजमेर रेलवे स्टेशन धरि टांगासँ गेलहुँ। यदि टांगा सवारीक आनन्द लेबाक हो तँ एही भागमे से आनन्द उठा सकैत छी। आगरासँ अजमेर धरि बीचमे जयपुरोमे जे सनगर घोड़ासभ जोतल टांगासभ देखलहुँ तँ सरिपहुँ इतिहासमे पड़ल महाराणा प्रतापक चेतक नामक घोड़ाक वर्णन सत्य बूझि पड़ल। अजमेर स्टेशनसँ दस व्यक्तिक सीट-बला भरहा मोटर (सम्पनी सन) भेटल, जाहिसँ विदा होइत गेलहुँ। अजमेर नगर पार कऽ आगाँ बढ़ला उत्तर एक झील भेटल, जकर कातेकात पहाड़क तलहटीमे मोटर पहुँचल। पहाड़क शृङ्खलापर जाइत-अबैत बस, मोटर ओ मनुष्यक पंक्ति नीचाँ, झीलक दर्पण समान स्वच्छ जलमे प्रतिबिम्बित होइत छल। श्यामल-श्यामल लता वृक्षसँ आच्छादित बाट-पर जाइत-अबैत मोटर-बस दूरसँ लगैत छल जेना छोट-छोट नेना खेलौनाबला मोटरकेँ एमहरसँ ओमहर गुड़कबैत हो। तीन फेरा मारि ई पहाड़ पार कयल जाइछ। से तीनू फेरापर दौड़ैत बस संयोगसँ

एक सोझमे अबैत छल से देखि बूझि पड़ैत छल जेना बस तिनमहला भऽ गेल हो। ओहि बाटपर यात्रा करैत बड़ नोक लागि रहल छल। यद्यपि बहुतो लोककेँ एहि चक्करपर पार करैत-करैत माथोमे चक्कर आवि जाइत छनि, जाहि कारणेँ बाटमे बोकरीत सेहो देखलहुँ, मुदा हमरा-लोकनिक मोनमे होइत छल जे ई बाट जल्दी नहि पार होइत तँ बड़ उत्तम छल।

सर्व प्रथम हमरालोकनि ज्येष्ठ पुष्कर पहुँचलहुँ। ज्येष्ठ पुष्करक चारूकात पचासो घाट ओ धर्मशाला सभ बनल अछि। ई एक प्राकृतिक तालथिक तँ स्वतः चारूकात पावंत्य-शृङ्खलासँ घेरल अछि। वराह घाट, ब्रह्म घाट, सूर्यघाट, चन्द्रघाट, शिव-घाट, परशुरामघाट, कर्णघाट, जनक घाट आदि।

पुष्कर क्षेत्रक उत्तरमे कबरा नामक पहाड़ अछि, जकर पछुरिया छोरपर भगवती श्री सावित्रीक मंदिर छनि। ब्रह्माक मंदिर, पाप मोचनीक मंदिर, अटमटेश्वर महादेवक मंदिर, बड़े रंगनाथजीक मंदिर आदि मुख्य ओ दर्शनीय अछि।

एहि ठाम एक स्वर्ण स्तम्भ अछि, जे सूर्यक किरणमे दूरेसँ देदीप्यमान लगैछ। एकर पूर्वोत्तर कोनमे गयाकूल पड़ैछ, जाहि ठाम लोक पितरकेँ



ब्रह्मतीर्थमे ह्याक मन्दिर

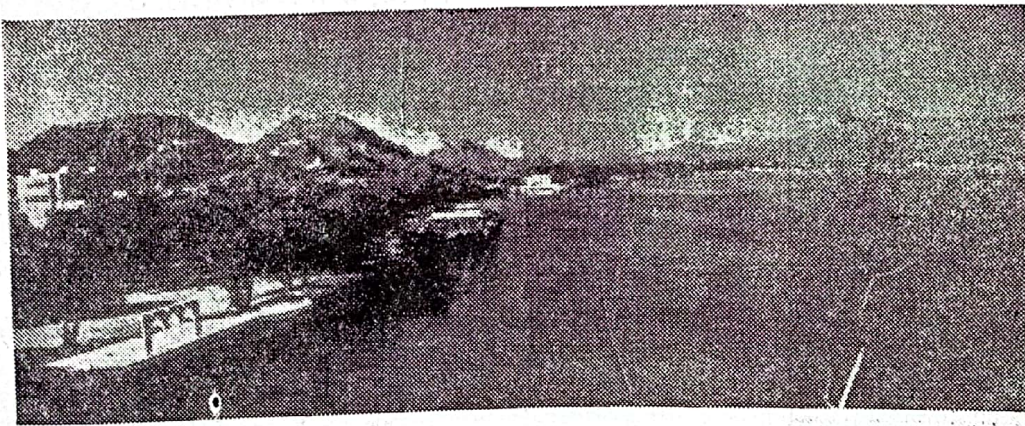
पिण्डदान करैत अछि। पुष्करक पश्चिम मे प्राचीन सरस्वती नामक नदी अछि, जकर एहि पारमे ध्रुव आश्रमओ ओहि पारमे सोम श्रृषिक आश्रम पड़ैछ।

हमरालोकनि स्नानादि क्रियासँ निवृत्त भऽ जखन स्थानक परिचय प्राप्त करऽ लगलहुँ आ ई सुनबामे आयल जे एकर उत्तर भागमे जनक घाट सेहो अछि तँ एक बेर हृदय गौरव

ओ आनन्दोल्लाससँ भरि गेल। ओहि आनन्दक अनुभव मातृभूमिक गौरव सूनि आनन्दित भेनिहार व्यक्ति ओहि ठाम जाइयेकऽ कऽ सकैत छथि।

ओहि ठामक जनसमूहमे जेना हमरालोकनि विलीन भऽ गेलहुँ। बादमे श्री मधुसूदन ठाकुर ओकील आदि बहुतो लोक अपना दलक भेट-लाह। जइतीकाल जहिना सवारीक सुविधा भेल छल तहिना घुरती काल कठिनतो भेल। मेलाक यात्री घूरि रहल छल।

पूर्व दिन अपने जमाँतिमेसे हू व्यक्ति जे अगुताकऽ अगुआ गेल छलाह, ओ जे भुखले-पियासले साँझमे घूरि अपन घटनाक वर्णन कयने छलाह, से स्मरण कऽ जे-जे सवारी भेटबामे विलम्ब होइत छल तँ-तँ हाथ पयर हेरायल जाय, किन्तु भगवानक कृपासँ आ अहाँसभक आशी-वर्दिसँ हमरालोकनि सकुश अजमेर घूरि अयलहुँ।



पुष्कर क्षेत्रक अपर तालक दृश्य

ताहि क्रमेँ नेत्रक अस्थिर पर्यवेक्षण सेहो अधिक भऽ रहल छल । कालेजक पढ़ाइक गुरुत्व, परिश्रमक आधिक्य तथा अपन निन्दामुख प्रशंसा, त्रिपथ-गाक निरंतर बहा रहल छल, ओम्हर ओहि कोठलीक कपाट कनेक सन हील-डोलि मानू स्पष्ट कहि रहल छल, “ई सभ गप्पक मर्म हम खूब बुझैत छी ! मुदा बाहर कोना होयब . . . अहाँक सोझाँ ?” एम्हर वृद्धाक मुखसँ एहि किशोरी कुमारीकेँ ककरो हाथमे दऽ काशीवासिनो होयबाक मंगलकामना बहिर्गत भऽ रहल छल, ओम्हर ककरो चूड़ीक खनक वातावरणकेँ सुमिष्ट बनबैत मानू व्यंग्य कऽ रहल छल “एतबे ! दर्शन नहि !” कण्ठ हमर बहिर्गत कयलक, — “एखने एकर कोन चिन्ता ? कहू तँ भला !”

वृद्धाक सस्मित उत्तर छल, “आब कहिया चिन्ता होयत ? बढुनक छैक ने अभागलि ! ओना वर्ष तँ दसम छैक” मुदा बात काटि हम अपन पैघत्व प्रदर्शन कयलहुँ “एखन विवाह करौने हिनका जहलो जाय पड़ैनि से कोनो असम्भव नहि ! आ कतहुँ बाट-बटोहीकेँ तँ नहिये हाथ घरा देखिन !” उद्विग्न भऽ वृद्धा बजलीह, — “हे बाबू, सँह ने बड़का चिन्ता अछि ! हमरा के अछि जे सभा जायत ? नीक घर-वर कपारमे लिखल रहितँ कतँ बापे-मायकेँ हरण कऽ लितथिन विधाता ? बाबू ! हमर तँ जाति-पाँजि आब बिलटले अछि, सँह बूझि लिय । कपार-पर डाक दऽकऽ चल गेल अपने आ हम आब पाग पहिरू !” वृद्धाक कण्ठ हठ भऽ चलल, विलाप करबाक उपक्रम प्रारम्भ कयलनि । तावत् पुनः सम्मुखक कपाट हील-डोलि मानू अन्तरालवर्तिनीक मूक वेदनाकेँ स्फुट करऽ लागल । आकुलताक संग सम-वेदनाक पुट भरैत हमर कण्ठ-बहरायल, — “कनेक जल पिबितहुँ !”

पन्द्रह अगस्त

निर्मल नभपर
मात्तण्ड प्रबल
उदण्ड किरणसँ तप्त भेल
विश्वक समस्त कऽ दूर
निविडतम अन्धकार
सूर्य-वतीक कऽ देखि
द्विगुण आंखिक इजोत,
जनिका दृष्टिक पथपर नाचय
सदिकाल
प्रबल वेदान्तक सब सिद्धान्त
सतत रत कर्मयोगमे,
पाबि प्रखतर रश्मि रविक
पुलकित होइत छल गात्र जनिक
से योगीगण,
निर्भय अनुक्षण,
उदण्ड प्रतापेँ,
शमन दमन ओ दण्डभदकेँ
अपनीने
पृथ्वीक एक सम्राटक
छत्रच्छायामे निश्चिन्त छला ।
नहि खलक छलक छल भय ककरहु
नहि पापीकेर लेख कतहु,
अन्यायीकेँ कऽ भस्मसात्
जे हरथि दम्भ
से सार्वभौम सत्ताधारी
भारतक भूमिकेँ छला अलंकृत-
जावत धरि कयने
ता धरि
नहि विश्वक कोनो भाग
अशांतिक अनुभव मात्र करैत रहय
सर्वत्र शान्तिमय स्रोत बहय
मिथिलाक कोरमे प्रतिपालित
सूगा धरि चारू वेद कहय
+ + X
निर्मल नभपर
श्यामल-श्यामल मेघक टिक्कर
टहलऽ लागल
अन्यायी चारू दिस जागल
उदण्ड किरणकेँ झाँपि-तोपि
कऽ उठल घटा
सूर्यक ‘प्रताप’ भऽ गेल अस्त
संसार व्यस्त भऽ उठल
बहल अन्यायक अविरल स्रोत
विश्व भरिमे बढ़ि आयल बाढ़ि
गेल भक्तिया योगीकेर योग
तपस्वीकेर तपस्या गेल
विश्वमे विकट समस्या भेल,
कतऽ छल भरल ज्ञान-विज्ञान ?
कतऽ छल भूमि विश्वमे आन ?
हाय ! से महागर्तमे खसल

—श्री चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’—

धर्म-ध्वज धरणीमे जा धसल
मनुजसँ भेल मनुजता दूर
देशमे पँसल तेहने क्रूर
अलंकृत छल जे विश्वक अंश
भेल से पलमे चकनाचूर
स्वार्थकेर पजरल तेहन आगि
भस्म भऽ गेल जाहिमे लागि
विश्वकेर सार-भूत विज्ञान
बनल अन्यायक स्रोत महान
विकल भऽ आर्तनाद कऽ उठल
निखिल भभागक जर्जर प्राण
दंबकेँ देलक खूब धिक्कारि
विकल प्राणीक आर्तचोत्कार
तखन अवतार लेल साकार
अहिंसा मूर्ति
कयल मानवक मनोरथ-पूर्ति

X X X

आइ आयल ओ पवनक झोंक
दूर हटि गेल श्याम घनघोर
भेल अछि सम्प्रति स्वर्णमय भोर
आब निर्मल अछि गगनक प्रान्त
कतेँ दिनसँ जे छल अति शान्त
आइ बुझि पड़इछ से पुनि शान्त
आइ पुलकित अछि लोकक गात्र
आइ अछि भरल अमृतसँ पात्र
पीबि अमरत्व कयल सब प्राप्त
जतऽ छल दुखमे सब संलिप्त
ततऽ बुझि पड़इछ से सब तृप्त ।
तपस्या ई थिक ककर ?
जकर अछि विधिसँ बना देल
ओ दिव्य बुद्ध टा नेत्र,
जकर बल उपजल क्रान्तिक क्षेत्र,
धन्य नरपुङ्गव ! तोहर ज्ञान
धन्य नरपुङ्गव ! तोहर ध्यान
चकित अछि विश्वक सब विज्ञान
विजयमे मस्त तुमुल कोलाहलसँ
वा गंगा-यमुना-कलकलसँ
ई ध्वनि अबैछ अश्विराम—
‘धन्य हे कृष्ण धन्य हे राम
धन्य हे गान्धी रूप ललाम’
तपस्या सफल भेल जे हेतु
अतः फहराइत अछि ई केतु
अमरपुर धरिमे अछि जयनाद
आइ आयल अछि ई संवाद
सभक मुखपर अछि मधुरिम हास
आइ हँसि रहल हमर इतिहास
आइसँ अमर रहत ई पर्व
आइसँ अमर रहत ई गर्व
दानवी माया भऽ गेल अस्त
तुलायल पन्द्रह सँह अगस्त ।

“हय कहाँ गेली हय ?” वृद्धा बाबी मोर पाइलनि—“कने जल आनह तँ ! पीथिन !” वातावरण क्षणमात्र स्तब्ध । कोनो संचार नहि । काठक ओ मूक कपाट सेहो जेना किकत्तब्य-विमूढ़ भऽ उठल हो । चूड़िकावली सेहो जेना अपन कुंजन बिगारि गेल हो । ई अमर्मजस देखि हम अपन मांगकेँ आर दृढ़तर कयलहुँ “जाइ छी बहिनियेक घर पीबि लेब !” “नहि नहि” तावत् वृद्धा हठात् मुखर भऽ उठलीह,—“हय, कहाँ गेलीह ? लाज होइ छैक । हय, एखन कोन ? बेस हमही आनि दी !” ई कहि वृद्धाक तुन्दिल अवयव यावत् उठबाक उपक्रम करऽ लागल तावत् हम अकान्तहुँ, ग्लास रगड़ि-रगड़ि माँजल जा रहल अछि, जकर ध्वनि चूड़िकावलीक झनझनीसँ मीलि मानू कानमे ढारि रहल छल ‘स्वाद सुधा केर-मुख वसुधाकेर ।’ हम बारण कयलहुँ—“ई नहि उठथु, हम अपनहि लऽ लैत छी । ई किएक हरान होयतीह ?”

एके धापमे हम “मनसा-वाचा-कर्मणा” ओहि कपाटक लग वृत्त ! कपाट स्वयं तँ मूक छल परन्तु अन्तरालमे सन्निहित कयने छल से तापकेँ, जे शीतक प्रातोमे पिपासाक कारणे कण्ठ अवरुद्ध कऽ रहल छल । आकुल कण्ठसँ निकसल भिक्षाक याचना, गह्वरित, उद्विग्न, उद्वेलित, “कृपा होयतैक ?” तावत् पाँचों कमनीय आंगुरसँ आवेष्टित जलपूर्ण झलकैत एक ग्लास शनैः शनैः कपाटक अन्तरालसँ बहरायल, थर-थर विकम्पित ! जाहि कारणे ग्लासक जल राशिमे छोट-छोट तरंग उद्वेलित भऽ रहल छल, एक-एक ऊर्म तरंगित भऽ मानू सुमिष्ट संदेश दऽ रहल छल, “खूब बुझैत छी हम. . . अहाँकेँ केहन पियास लागल अछि ।”

हमर हाथ अग्रसर भेल, ग्लास लेबाक प्रयास कयलक । नहि जानि,

(शेष पृष्ठ १६ पर)

हमर कन्तू भाइ यदि कोदराष्टक-
मे पण्डित छथि तँ अहाँ ई जुनि बूझि
लियनि जे ओ कर्मकाण्डक कन्मो
भरि नहि जनैत छथि । कनेक-मनेक
कसरत आ कनेक मनेक-कुस्ती-
किछुकेँ छोड़ने नहि छथि; कोनो-ने-
कोनो कान सब कथुक पकड़नहि
छथि । से, एक बेर कन्तू भाइ कूशे
कामतिक संग गेलाह नेपाल तराइ ।
कूशे कामति केदार झा पुरोहितक संग
अधिक काल ओहि 'पानी' गेल करय
आ मास दू मास घूमि-घामिकऽ देहो
पोसि लेख्य । चालिस-पचास टाकाक
आमदनियो भऽ जाइक । संगहि थारू
सभक बीच कोन तरहे पुजाओल
जाइत छैक आ कतेक तरहें पाइ
घिचबाक जोगाड़ धराओल जाइत
छैक ई तऽरी-भिठ्ठी कूशे कामति
सिखिये लेने छल ।

कूशे कामतिक घर लग कन्तू
भाइक केरा बाड़ी, जकर एक टा कोना
धूर सातेक टेंड । जँ कन्तू भाइ ओतबा
जमीन कूशे कामतिकेँ दऽ दैत छथिन
तँ हिनको बाड़ी सोझ आ कूशे कामतिकेँ
जे बासमे सिकस्ती छैक से कनेक
खुसफैल भऽ जयतैक ।

कन्तू भाइक लग जखन ई प्रस्ताव
अयलनि त ओ अपना बाड़ीकेँ चौवट



गंगास्नान नीक की कदीमा ?

कन्तू भाइक कदीमा

श्री चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'

करवाक विचारसँ स्वीकार कऽ लेल-
थिन । गामक लोक तँ एक नम्बरक
जरनियाह होइत अछि ! कूशे काम-
तिक देयाद कैलू कामति । जखन
कैलू कामति सुनलक जे कन्तू बाबू
कूशेकेँ बाड़ीक ई कोन दऽ देबऽ चाहैत
छथिन तँ जोर लगौलक जे कूशेसँ
पाँच रुपैयाँ धूर हम बेसी देब आ
ई हमरे लिखि दियऽ । दू सय रुपैयाँ
कट्टा दऽर टूटल रहनि से कैलू तीन
सय रुपैयाँपर पहुँचि गेल । तीस-पैंतीस
टाकाक लाभ छलनि तँ हमर भौजी
कन्तू भाइपर कस्ती कयलथिन जे
कैलूकेँ छोड़ि अनका ई जमीन दइये
नै सकैत छिएक । कन्तू भाइ एक
बोलिया लोक । कहथिन जे जखन एक
बेर कहि देलियेक तखन बात कोना
लौट ? मर्दक बात हाथीक दाँत जे
मुँहसँ बाहर भेल, बाहर भऽ गेल ।
हम कोनो कांग्रेसी नेता तँ छी नहि
जे कखनहुँ किछु कहलहुँ, कखनहुँ
किछु ।

मुदा हमर भौजी टससँ मस भेनि-
हारि नहि । कतबो कन्तू भाइ बुझी-
लथिन जे कैचा-कौड़ी हाथक मँल
थिक, एहिना अबैत छैक, एहिना
जाइत छैक । कैलू तँ देयादी डाहक
कारणें लेबऽ चाहैत अछि आ कूशे-
केँ घरक खगता छैक । ताहिपर
हमर भौजी सनकि उठलीह—बड़
महतमा गान्धी भेलहुँ अछि तँ जे
फूरय से करू, मुदा हमरा नूआ फाटि
गेल अछि से एखने आनि दियऽ ।
कतेक दिनसँ नैयारने छी, गंगामे
डूब देना दस बरखसँ उप्पर भऽ गेल,
से एहि बेर दशहरा दिन हम जयबे
करब । तकर खर्च जोड़िकऽ दऽ दियऽ
तखन जाइ मङ्गीयमे ककरो लिखि
दियौक, हमरा की ताहिसँ ?

कन्तू भाइ एहि पेकड़मेसँ छुट-

कन्तू भाइकेँ लोक ओना
एकबोलिया जे बुझनु, मुदा
हुनका कुटम्मस-विद्या सेहो
बेस अबैत छलनि । से जखन
ओ भौजीपर एहि विद्याक प्रयोग
करऽ लागथि तँ अपने मारैत-
मारैत अपस्यांत होथि आ भौजी
मारि खाइत-खाइत अपस्यांत
होथिन । एहिना एक दिन कन्तू
भाइ कुटम्मस-विद्याक प्रयोग
कऽ गामसँ विदा भऽ गेलाह आ
ओहि 'पानी'मे जाकऽ जोग-
टोन सुरूह कयलनि । कदीमाक
दक्षिणा हुनका ततेक प्रियगर
भेलनि जे बँलगाड़ीपर लाडि
गाम अनलनि । तकरा बादक
कथा प्रस्तुत हास्य-कथामे
भेटत ।—सं०

बाक हेतु कहलथिन—'बेस, ओरियान
करैत छी तँ सबटा बेगर्ता शांत कऽ
देब ।' मुदा अड़ारिमे मोहल्लति
कोना ? हमरा भौजीकेँ तँ ठाढ़े-
ठाढ़ चाहियनि । बस, बातावाती
रेका-तोकी पर उतरल आ अंतमे कन्तू
भाइक कुटम्मस सुरू कयलनि तँ
परोसिया चूड़ा पँच लेबऽ पहुँचि गेल
थिन । धम-धम जे सुनिथिन से भेल
जे चूड़े कूटल जा रहल छनि ।

कन्तू भाइ मारैत-मारैत अप-
स्यांत छलाह आ भौजी हमर मारि
खाइत-खाइत अपस्यांत छलीह ।
एहि तरहें कन्तू भाइक आङनमे
लंका-काण्डक प्रथम सर्ग समाप्त
भेल । भौजी भानसक कोहा-कराहीपर
अपन रोब झाड़लनि आ कन्तू
भाइ अपन कुर्ती पहिरि घोतीकेँ
कँखियौलनि । भौजीकेँ विश्वास
छलनि जे पहर डेढ़ पहरमे अपने

फेर धूरि ओताह, तखन मनाओन
करताह, तखन हम चूल्हिक पूजा सुरू
करब, मुदा भौजीक अनुमान ठीक नहि
भेलनि । अहर बीतल, पहर बीतल,
दुपहरसँ बेर ढरऽ लागल, धीया-पूता
खयवा लेल काँउ-काँउ करय, मुदा
विनु मनाओने भौजी जँ भानस कइये
लेथि तँ मर्यादा रहलनि कोना ? दिन
भरि धीया पूता फलाहार कऽ गेल,
बाड़िये-बाड़ी लतामक गाछपर घुमैत
रहल । दिनकर भगवान रंगमंच छोड़ि
पाट गेलाह आ भोजियोक जठरानलमे
तीक्ष्णता अयलनि तँ उठिकऽ गेलीह
चूल्हिक मुँह झरकावऽ ।

मास बीतल, दू मास बीतल,
तेसर मास आरम्भ भेल, मुदा हमर
कन्तू भाइ गाम नहि अयलाह । आब जे
भौजीक प्राण सुखायल जाइनि तँ
लोक आरो टीप देल करनि जे हुनकर
दूनु साँझक सिद्धा वचल जाइत अछि
ताहीसँ गंगा नहा लियऽ ।

कन्तू भाइ आङनसँ चललाह तँ
कूशेक ओहि ठाम पहुँचलाह । ओकरा
सब हाल-चाल कहि सुनीलथिन ।
संगहि ईहो कहलथिन जे क्यो किछु
कहत, कतबो बेसी टाका देत, मुदा
हम अपन बातसँ लौटि नहि सकैत
छी । तोँ आइये चलह आ हमरासँ
रजिष्ट्री करा लैह ।

कन्तू भाइक एहि वचनक दृढ़ताक
कारणें कूशे कामतिकेँ हिनका प्रति
अपार श्रद्धा भऽ गेलैक । ओ मनहि मन
सोचि गेल—जँ कैलूकेँ लिखि दित-
थिन तँ हिनका पैंतीस टाका आरो
होइतनि, जँ हमरा लेवाक खोहिस
होइत तँ डाक बढऽ पड़ैत आ से
आङनवालीसँ झगडाकऽ कन्तू बाबू
हमरे जमीन लिखऽ चाहैत छथि,
सोआइत ई धरती एखन धरि वॉचल
अछि, एहन-एहन धर्मात्मा जे एखन
धरि एहि दुनियाँमे छथि, तँ संसार
अछि, नै तँ ततेक पाप लोक करैत
अछि जे भरती रसातल चल गेल
रहितथि ।

एही सोचवाक प्रसंग कूशे कामति सोचि लेलक जे एकर बदला दोसर तरहेँ अवस्से चुकयवाक चाही । ओकरा फूरि गेलैक जे कण्ठीर पुरो-हितक जजमनिकासँ बाहर जँ हिनका ओहि पानी लऽ चली तँ अपनहुँ किछु आमद होयत आ हिनको आमदनी करा देबनि ।

जखन कन्तू भाइक सोझाँ ई प्रस्ताव रखलकनि तखन तँ ई सात हाथ कूदि उठलाह । दूनू गोटे गामसँ चलि देलनि । खजौली होइत रजिष्ट्री करैत जयनगर उतरलाह आ ओम्हरेसँ खावा पार भऽ थारुसभक गाम पहुँच-लाह । कूशे कामतिकेँ ओ सब चिन्हिते छलैक, मुदा एहि बेर पुरोहितकेँ अनचिन्हार देखि एक टा बुढ़वा बाजि उठलैक—‘आरौ छिनरी केँ, ई तऽ दोसर पुरहीत छियइ ।’ ई अपशब्द सुनिते कन्तू भाइक कान ठाढ़ भेलनि, कहलथिन—‘हौ कूशे, ई तँ गारि पढ़ैत अछि हौ !’

कूशे कामति आश्वासन दैत कहलकनि—ई गारि नहि पढ़ैत अछि, ई एकरासभक लबधि थिकैक, एकरा कान-बात नहि धरब ।

थारुसभकेँ अछिन्हरे गाय । से, गाइक दूध आ गाइक घिससँ बूझ स्नाने करबऽ लगलनि । जखन कूशे कामति कहलकैक जे ई पुरहीत नहि, गुरु थिकाह ।

ओ सब गुरुक अर्थ बुझैत छैक जे यन्त्र-मन्त्र जनैत अछि, झाड़-फूक करैत अछि, फूल-विभूतिसँ घर-द्वार, नेना-भुटका, माल-जालसभक रक्षा करैत अछि से थिक गुरु ।

कूशे कामति सिखवैत गेलनि—‘जतेक टोमन-टोमन करब, ई सब ततेक पैघ गुनी मानत आ जँ मन्त्र लऽ लेलक तँ बूझ जे जजमनिका जागि गेल ।’

कन्तू भाइ जे पूजा-पाठक टोप-टहंकार आरम्भ कयलनि तँ ओ सब

दंग रहि गेल । परोपट्टामे गर्द पड़ि गेल जे बड़ी भारी गुरु अयलैक अछि । ई बैसथि पूजापर आ चारु भाग

‘कतेक गुरु आ कतेक पुरहीत देखली, महज ई गुरु छिनरी के असलकी छिगीक । एक टङरीपर ठड़ा छोक आ

वं वैंछनाथ

वं वं वं वं वं वैंछनाथ
अम्बर-अम्बर अति विष्य अंग
भस्माभिभूत भूषण भुजंग
सिर जटाजूटसँ बहयि गंग
अनुपम छवि बाल-मयंक माथ
वं वं वं वं वं वैंछनाथ

रवि, शशि, वैंश्यानर, तीन नयन-
सँ करी अविद्या तमक हरण
भक्तक त्रिताप विष पीबि समन
जय नीलकण्ठ, जय प्रमथनाथ
वं वं वं वं वं वैंछनाथ

अद्भुत अज्ञेय अहाँक ढंग
अछि संग सुधाकर पान भंग
देवाधिदेव गण भूत संग
बासो मसान, छी विश्वनाथ
वं वं वं वं वं वैंछनाथ

परमेश ऊँ जय शिव महान
भय पराभवक आद्यावसान
चल ताण्डव लास्यक गति समान
नहि याचक धूरय रिक्त हाथ
वं वं वं वं वं वैंछनाथ

सब क्लेश, कर्म, आशय विपाक—
केर मुण्डमाल झूलय अहाँक
कर वर त्रिशूल डमरू पिनाक
‘अणु’ चाह छाँह तब अभय हाथ
वं वं वं वं वं वैंछनाथ

—श्री अणु

तमसगीरक टाट लागि जाय । ई एक टाङ्गर ठाढ़ भऽ जप करऽ लागथि तँ ओ सब अपनामे गप्प करऽ लागय—

एको मसुरी भरि ने डोलैत छीक ।’ कन्तू भाइ नाक दाबिकऽ प्राणायामक अभिनय करथि तँ ओ सब विस्फारित

नेत्रेँ एक दोसर दिस तकैक । अन्तमे मन्त्र लेनिहारक ढेबाहि लागि गेलनि ।

कूशे कामति टहल-टिकोरा करनि । अपने दूनू साँझक सत्ती एके साँझ रान्हिकऽ चारि वजेमे भोजन नहि, भक्षण करथि आ साँझ पहर जोर-जोरसँ अमरकोषक स्वर्ग वर्ग जे नेनामे अम्यास कयने रहथि तकर पाठ करथि ।

पहिल दिन जे मन्त्र देवऽ गेलथिन तँ घरमे एक कोनमे सीकपर बेस पाकल पैघ कदीमा छलैक टाङ्कल । कन्तू भाइ कदीमाक प्रेमी, कारण तरकारीमे जेठरैयति तँ कदीमे होइत अछि । ओकर लोभ जोर कयलकनि तँ दक्षिणा लेबाक काल कहि देलथिन—‘कदीमा लऽऽ स्वाच्छल ।’

एक जोड़ धोती, एक टा कम्मल, एक टा बाछी, दस टाका नगद, पाँच पसेरी चाउर, एक पसेरी घिउ यँह सब एक मन्त्रक पाँछा दक्षिणा भेटल करनि, ताहिपरसँ एक कदीमा । अढ़ाय मास जे रहलाह से अपने लाल बुन्द भइये गेल रहथि । बीस गोटे एहि यात्रामे मन्त्र लेलकनि ।

जखन कन्तू भाइ घुरलाह तँ एक टा बैलगाड़ीपर बोरामे चाउर, कंटरमे घिउ, मोटामे कपड़ा ओ कम्मल आ सबसँ ऊपर बीस गोटे कदीमा लदने जजमान संग अयलनि ।

भौजी हमर कूदि उठलीह, टोल भरि बेनमे कदीमा परसल गेल । सबसँ बड़का कदीमा जे भौजी सीक-परकऽ टाङ्कल लगलीह तँ कन्तू भाइ टीप देलथिन—‘गंगास्नान नीक की कदीमा ?’ भौजीकेँ एकर दोसरे अर्थ लगलनि ओ झट दऽ अपन पेट परक सरकल नूआकेँ ससारलनि ।

कूशे कामति जखन कदीमाक रहस्योदघाटन कयलक तँ कन्तू भाइ कदीमा गुरु नामेँ प्रसिद्ध भऽ गेलाह ।